www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 04 अगस्त 2013 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 04 अगस्त, 2013 से 10 अगस्त 2013

श्रा. कृ.–13 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 67, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. पुष्पांजलि दिल्ली में हुआ शान्ति यज्ञ

डी.ए.वी. स्कूल, पुष्पांजलि के प्रांगण उत्तराखण्ड में दिवंगत आत्माओं की शान्ति प्रार्थना व श्रद्धाञ्जलि के लिए शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया।

शान्ति यज्ञ में छात्र–छात्राएँ और अध्यापक अध्यापिकाएँ सम्मिलित हुईं। सभी ने वेद मन्त्रों के उच्चारण से दिवंगत आत्माओं की शान्ति की कामना की। यज्ञोपरान्त **''पर्यावरण एवं सन्तुलित विकास''** विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यकारी–प्रधानाचार्या श्रीमती मोनिका ग्रोवर ने बच्चों को उद्बोधित करते हुए कहा कि ईश्वर ने प्रत्येक जीव और प्रकृति को एक दूसरे के सहयोग के लिए बनाया है और जब भी इसका असन्तुलन होता है तो प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं। हमारा असन्तुलित और अमर्यादित विकास ही हमारे विनाश का कारण बनता जा रहा है।

श्रीमती ममता शर्मा ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ऐसी आपदाएँ मात्र प्राकृतिक असन्तुलन से ही नहीं आती अपितु हमारा व्यवहार भी इन आपदाओं का कारण बनता है। बच्चों को सम्बोधित करते हुए श्रीमती ममता शर्मा ने कहा कि हमें प्रण लेना चाहिए कि हम प्रकृति की रक्षा के लिए कार्य करते रहेंगे। श्री कृष्णावतार ने कहा यज्ञ से जहाँ हमारा पर्यावरण शुद्ध होता है, वहीं हमारी आन्तरिक भावना भी शुद्ध होती है।

डी.ए.वी. स्कूल राजगढ़ भरेगा ऊंची उड़ान

डी.ए.वी. सेन्टनरी पब्लिक स्कूल, राजगढ़, हि.प्र. के प्राङ्गण में स्कूल के नाम भवन व जमीन की रजिस्ट्री हो जाने के सुअवसर पर यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज राजगढ़ के प्रधान श्री मदन सिंह वर्मा जी और वेद प्रकाश वर्मा जी ने **''आर्य समाज डी.ए.वी. राजगढ़''** के सदस्यों संग हवन द्वारा दिवस का शुभारम्भ किया। हवन समाप्ति पर श्री वेद प्रकाश वर्मा जी ने प्रधानाचार्या श्रीमती रीना मल्होत्रा जी को इस कार्य के लिए बधाइयाँ देते हुए कहा कि इनके अथक प्रयासों व डी.ए.वी. प्रबन्धकर्तृ समिति' के प्रधान श्री पूनम सूरी जी की असीम अनुकम्पा के कारण यह कार्य सफल हो पाया है। आर्य समाज राजगढ़' व डी.ए.वी. राजगढ़' के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि महात्मा आनन्द स्वामी जी ने ही 'आर्य समाज राजगढ़' का शिलान्यास किया था और अब उनके पौत्र श्री पूनम सूरी जी के कारण ही 'डी.ए.वी. राजगढ़' जमीन के कारण अस्तित्व में आ पाया है।

डी.ए.वी. राजगढ़ की प्रधानाचार्य श्रीमती रीना मल्होत्रा जी ने भी अभिभावकों व श्री पूनम सूरी जी का हार्दिक धन्यवाद प्रकट करते हुए भविष्य में उनके आशीर्वाद बने रहने की आशा प्रकट की और कहा डी.ए.वी. राजगढ़ अब ऊंची उड़ान भरेगा। इस विद्यालय को शीघ्र ही 10+2 में तबदील करने का सुनहरा सपना दिखाते हुए बताया कि हमारे बच्चों को फिर 45–50 कि.मी. दूर पढ़ाई करने नहीं जाना पड़ेगा।

डी.ए.वी. सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली में पर्यावरण-चर्चा एवं 'शांति यज्ञ'

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर–7, रोहिणी, दिल्ली के विद्यालय परिसर में उत्तराखण्ड त्रासदी से पीड़ित लोगों के लिए प्रार्थना एवं 'शांति यज्ञ' किया गया, जिसमें विद्यालय के सभी वरिष्ठ अधिकारी, अध्यापक, विद्यार्थी व कर्मचारी सम्मिलित हुए। यज्ञ के उपरांत 'पर्यावरण एवं संतुलित विकास' विषय पर परिचर्चा की गई। जिसमें विद्यार्थियों ने पर्यावरण के प्रति अपनी जागरुकता प्रकट की। परिचर्चा में विकास की अंधी दौड़ में पर्यावरण का संरक्षण व संवर्धन सभी का दायित्व बताया गया। इस अवसर पर उपस्थितिजनों ने पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की। प्रधानाचार्या ने भारतीय सेना एवं सेवाभावी लोगों की प्रशसा की। उन्होंने कहा यह आपदा केवल उत्तराखण्ड की ही नहीं है बल्कि पूरे देश के लोग इससे प्रभावित हुए हैं। वहाँ के लोगों को आज भोजन, आवास व रोजगार की समस्या से जूझना पड़ रहा है। इस दु:खद घड़ी में हम भी उनके साथ खड़े हैं। उनके लिए जितनी भी सहायता हो सके, हम यथासंभव करने के लिए तैयार हैं।

यज्ञ की समाप्ति पर सभी ने मिलकर ईश्वर से प्रार्थना की, कि त्रासदी में दिवंगत हुए लोगों की आत्मा को शांति एवं पीड़ित लोगों को कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 04 अगस्त, 2013 से 10 अगस्त, 2013

वन्दे मातरम्

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

शिला भूमिरश्मा पांसुः, सा भूमिः संधृता धृता।
तस्यै हिरण्यवक्षसे, पृथिव्या अकरं नमः।। अथर्व

ऋषिः **अथर्वा**। देवता **भूमिः**। छन्दः **अनुष्टुप्**।

● **(शिला)** शिला, **(अश्मा)** पत्थर, **(पांसुः)** धुलि [ही] **(भूमिः)** भूमि [है]। **(सा भूमिः)** वह भूमि **(संधृता)** सम्यक् प्रकार धारण की जाकर **(धृता)** [राष्ट्र के रूप में] धृत हो जाती है। (तस्यै) उस **(हिरण्यवक्षसे)** हिरण्यवक्षा, सुवर्णगर्भा **(पृथिव्यै)** भूमि के लिए (नमः अकरं) नमस्कार करता हूँ।

जिस राष्ट्र–भूमि पर हम अपना तन–मन धन बलिदान करने को तैयार रहते हैं, जिसके गौरव–गीत गाते हम नहीं थकते, जिसकी निन्दा सुन हमारा चेहरा तमतमा उठता है, और जिसकी प्रशंसा सुन हम आनन्द–विभोर हो जाते हैं, उसका विश्लेषण करके देखें तो वह शिला, पत्थर, धूलि आदि का निर्जीव समूह मात्र है। वह क्या वस्तु है जो उस निर्जीव पृथिवी को सजीव राष्ट्र के रूप में परिणात कर देती है? वह वस्तु है उसके निवासियों का परस्पर संगठित होकर, सबको एक इकाई मानकर, अपने अभ्युदय के लिए उसे संधृत करना। संधृत करने में भूमि के वन, पर्वत, खेत, बाग–बगीचे, मैदान, खनिज की खानें, नदियाँ, समुद्र, सबको सजाना–सँवारना, अधिकाधिक उपयोगी बनाना, उद्योग–धधों, कल–कारखानों आदि को प्रतिष्ठित एवं विकसित करके उत्पादन बढ़ाना, प्रजा की शिक्षा–दीक्षा, चिकित्सा, सामाजिक उन्नति आदि की व्यवस्था करना सब सम्मिलित है। ऐसा करने पर वह शिला, पत्थर, धूल–मिट्टी का ढेर मात्र निष्प्राण पृथिवी सप्राण राष्ट्र–भूमि के रूप में आदृत होने लगती है। तब उसके सम्मान को हम अपना सम्मान और उसके अपमान को अपने समझने लगते हैं। उसकी एक–एक इंच भूमि की रक्षा को, उसकी चतुर्मुखीन उन्नति को, उसकी कीर्ति–प्रतिष्ठा को अन्य राष्ट्रों में उसे उच्च स्थान दिलाने को हम अपना कर्तव्य समझते हैं।

भूमि 'हिरण्यवक्षाः' तो पहले से ही है क्योंकि उसके गर्भ में कहीं सुवर्ण–रजत की खानें भरी हैं, कहीं हीरे मोती, रत्न, मणियाँ बिछी हैं, कहीं मूल्यवान् तैल–कूप भरे हैं, कहीं अन्य विविध खनिज द्रव्य विद्यमान हैं। किन्तु अब राष्ट्र–भूमि का रूप धारण करने के पश्चात् तो वह सच्चे अर्थों में हमारे लिए 'हिरण्यवक्षाः' हो गई है, क्योंकि हमारे राष्ट्र द्वारा 'कहाँ कौन–सी सम्पत्ति भू–गर्भ में छिपी पड़ी है' इसका अनुसंधान करके राष्ट्रियस्तर पर उसमें से हिरण्यादि सम्पत्ति को प्रजा के हितार्थ निकाला जाने लगा है।

हे अपने वक्षः स्थल पर हिरण्य–हार से अलंकृत, मणिमुक्तारत्नापलंकारधारिणी, सुजला ,सुफला, मलयज–शीतला, सदस्य–श्यामला, गौरव–मंडिता, यशस्विनी, मनोमोहिनी, समृद्धिमयी मातृभूमि! तुझे हमारा नमस्कार है, शतशः नमस्कार है।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

घोर घने जंगल में

● महात्मा आनन्द स्वामी

बात चल रही थी कि परमात्मा रूपी आधार के साथ रहेंगे तो बचे रहेंगे, नहीं तो तड़पते रहेंगे, बेचैन होते रहेंगे।

गोमुख से निकल कर गंगा सागर (जो विशाल हिन्द महासागर का एक भाग है) उस आधार तक निरन्तर भागती हुई गंगा का उदाहरण देकर स्वामी जी ने समझाया कि ऐ मानव। तेरा भी कोई आधार है। यदि तुझे भी गंगा जैसी व्याकुलता है तो तू भी गंगा की तरह हरा–भरा रहेगा, तेरे समक्ष भी संसार झुकेगा।

परन्तु हमें आधार की ओर जाने के लिए संघर्ष अच्छा नहीं लगता ठीक गंगा के उस जल की तरह जो उसकी व्याकुलता और निरन्तर दौड़ से अलग हुआ एक गड्ढे में जमा हो जाता है, फिर सड़ने लगता है और अन्ततः सूख कर समाप्त हो जाता है। ऐसे लोगों का जीवन नीरस हो जाता है। इसलिए कि आधार को तो छोड़ दिया। लेकिन सच्चा सुख मिलेगा तब जब आत्मा रूपी गंगा का आधार उस ईश्वर रूपी सागर को बनायेगे।

एक बात और वह करूणा का सागर, शुद्ध, पवित्र और स्वच्छ हृदय में ही विराजमान है–हृदयाकाश में।

अन्त में कठोपनिषद् के आधार पर स्वामी जी ने कहा वह ईश्वर परमाणु से छोटा और खरबों ब्रह्माण्डों से भी बड़ा है। आत्मा में बैठा उसे शक्ति दे रहा है।

अब आगे.....

अब आओ इस हृदय में। आँखें बन्द कर लो। कान बन्द कर लो और चलो, अन्दर देखो! मेरा यह तात्पर्य नहीं कि आँखों पर पट्टियाँ बाँध लो और कानों में रुई डाल लो। नहीं, संसार की ओर से कानों और आँखों को हटाओ। बढ़ो इस मार्ग पर जिसे योग कहते हैं–

भवतापेन तप्तानां योगो हि परमसाधनम्।

'ओ संसार के ताप से तपे हुए लोगो! आओ, सुनो! तुम्हारे दुःखों की, कष्टों और क्लेशों की चिकित्सा है। एक ओषधि है जिससे यह अशान्ति, यह निरन्तर भटकना, यह लगातार चीखना और चिल्लाना समाप्त हो सकता है। इस ओषधि का नाम है योग। यह परम साधन है।' योग का अर्थ है प्रभु के साथ अपने–आपको मिला देना। इससे बड़ी और कोई ओषधि नहीं, इससे बड़ा कोई साधन नहीं–

धर्मार्थकाममोक्षाणां नवैराग्ययोरपि।
अन्तःकरणशुद्धिश्च भक्तिर्हि परं साधनम्।।

'धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष– ये चार वस्तुएँ हैं जिनके लिए मनुष्य भटकता फिरता है। धर्म बुद्धि के लिए, अर्थ शरीर के लिए, काम मन के लिए और मोक्ष आत्मा के लिए। न केवल इन चारों के लिए अपितु ज्ञान और वैराग्य के लिए जो सबसे बड़े लक्ष्य मोक्ष की ओर ले जाते हैं, और इस चित्तशुद्धि के लिए जिसके बिना सच्चा ज्ञान और सच्चा वैराग्य कभी मिलता नहीं, इन सब बातों के लिए सबसे बड़ा साधन है भक्ति–**भक्तिर्हि परं साधनम्।**

श्री गुरु नानकदेव जी महाराज ने भी तो कहा–

सर्व रोग का ओषधि नाम।

'सब रोगों की, सब दुःखों की एक ही चिकित्सा है परम पिता प्रभु की भक्ति, प्रभु का नाम।'

अब प्रश्न होता है कि यह भक्ति करें किस प्रकार? बृहदारण्यक–उपनिषद् के पाँचवें अध्याय के पाँचवें ब्राह्मण में इसकी विधि बताई गई है। कुल पन्द्रह ब्राह्मण हैं इस अध्याय में। इसमें यह भी बताया गया है कि सृष्टि किस प्रकार उत्पन्न हुई। इतना सुन्दर, इतना वैज्ञानिक वर्णन है यह कि आज के बड़े–से–बड़े वैज्ञानिक भी इसे ठीक मानने से इन्कार नहीं कर सकते। लाखों वर्ष पूर्व जंगल में रहनेवाले एक साधु ने सृष्टि के उत्पन्न होने का जो हाल लिखा, वह यदि आज के वैज्ञानिक युग में भी ठीक है तो यह इस बात का प्रमाण है कि योग के मार्ग पर चलनेवाले इन महर्षियों का ज्ञान कितना ऊँचा था! कितना सत्य! मेरे पास कम समय है। पन्द्रह ब्राह्मणों की चर्चा मुझे करनी है, अभी पहुँचा हूँ केवल पाँचवें ब्राह्मण पर। यदि सृष्टि के इस चक्र में पड़ गया तो दूसरी बातें रह जायेंगी। इसलिए इसको

छोड़िये, केवल भक्ति की बात सुनिये। इस ब्राह्मण में उन तीन व्याहृतियों की भी चर्चा है जिन्हें हम गायत्री मन्त्र से पूर्व पढ़ते हैं। कई लोग बाद में भी पढ़ते हैं। वे तीन शब्द हैं– भूः, भुवः, स्वः।

भूः अर्थात् वह प्राणप्यारा ईश्वर जो सत् है, विद्यमान है; **भुवः** जो दुःखों को दूर करनेवाला है, चित् है, अनुभव करता है, जानता है; **स्वः** जो सुखों को देनेवाला है, आनन्दरूप है, सच्चिदानन्द है। परमात्मा ही भूः भुवः स्वः– तीन–तीन रूप में हमारे सामने आता है। भूः अर्थात् विद्यमान है; परन्तु केवल विद्यमान नहीं, पत्थर की भाँति पड़ा नहीं, वह भुवः भी है– हो रहा है, जी रहा है, अनुभव कर रहा है, दुःखों को दूर करने का प्रयत्न कर रहा है। केवल प्रयत्न ही नहीं करता, दुःख में घिरा नहीं रहता क्योंकि वह ईश्वर स्वः भी है– सुखों को देनेवाला आनन्द भी है। यह है आपका संसार है–विद्यमान है; हो रहा है– खड़ा नहीं है, आगे बढ़ रहा है; परन्तु क्यों आगे बढ़ रहा है? जो कुछ हो रहा है वह क्यों हो रहा है? आनन्द के लिए। सारे ब्रह्माण्ड में, सारे विश्व में, इसके छोटे–से–छोटे कण में और बड़े–से–बड़े महान् सौरमण्डल में, प्रत्येक स्थान पर भूः, भुवः, स्वः का चक्र चल रहा है। 'है', 'हो रहा है', 'आनन्द के लिए हो रहा है'।

और इस चक्र को चलाता कौन है? सविता–परमात्मा की वह शक्ति जो सबको प्रेरणा देती है, सबको कहती है– चलो–चलो, आगे बढ़ो। परन्तु इस चक्र को वह चलाती किस प्रकार है? 'भर्ग' से, उस शक्ति से जो सबको पका देती है, भून देती है; जिसके लिए हारना नहीं है, पीछे हटना नहीं है।

आप कहेंगे, आनन्द स्वामी! तेरी बात तो सुन ली, परन्तु पल्ले कुछ नहीं पड़ा। तो लो, यही बात दूसरे शब्दों में सुनो!

भूः भुवः स्वः– इस चक्र में फँसे हुए एक बीज को देखो। यह बीज पृथिवी के भीतर है परन्तु उसे चैन नहीं। मिट्टी के अन्दर, कीचड़ के अन्दर, पानी के भीतर वह एक प्रयत्न में लगा हुआ है। वह है अवश्य। भूः अर्थात् विद्यमान है, परन्तु इससे उसकी तसल्ली नहीं होती। यह भुवः बनना चाहता है, कुछ होना चाहता है। जब तक यह नया रूप न मिले तब तक उसे चैन नहीं। मिट्टी कणों से टक्करें मारता हुआ गर्मी और सर्दी की चिन्ता के बिना वह आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहा है। उसे शान्ति मिलती है उस समय जब वह छोटी–सी कोंपल के रूप में फूटकर पृथिवी से बाहर आ जाता है। अब बीज शान्त है। उसे वह आनन्द मिल गया जिसकी वह सोच में था। उसके साथ ही उसकी समाप्ति भी हो गई। परन्तु अब वह छोटी–सी कोंपल अशान्त है। वह भी कुछ है अवश्य, भूः = विद्यमान है परन्तु कुछ और होना चाहती है। उसकी इच्छा है कि वह पैदा बन जाये। इसके लिए वह यत्न कर रही है। जब तक पौधा न बने, उसे शान्ति नहीं। उसे लिए रुकना नहीं। उसे गर्मी, सर्दी, धूप या वर्षा, प्रकाश या अन्धकार की चिन्ता नहीं। बन गया पौधा। कोंपल शान्त हो गई। भूः भुवः स्वः। वह थी, कुछ और होना चाहती थी, आगे बढ़ी, पौधा बनी, आनन्द मिल गया उसे। अब कोंपल समाप्त है परन्तु पौधा अशान्त है, वह वृक्ष बनना चाहता है। जब तक वृक्ष न बन जाये, उसे शान्ति नहीं। बन गया वृक्ष, परन्तु अब यह वृक्ष अशान्त है। वह फूल बनना चाहता है। बन गया फूल। वृक्ष शान्त है, परन्तु फूल अशान्त है। वह फल बनना चाहता है। बन गया फल। अब यह फल अशान्त है। वह बीज बनना चाहता है। बन गया बीज। फल की बेचैनी का अन्त हो गया। अब यह बीज बेचैन है। वह फिर से कोंपल बनना चाहता है। पौधा वृक्ष बनना चाहता है। फूल फल के रूप की अभिलाषा करता है। फल तब तक शान्त नहीं होता जब तक बीज न बन जाये। इस प्रकार यह चक्र चल रहा है। भूः, भुवः स्वः– है, हो रहा है, आनन्द के लिए हो रहा है। अंग्रेजी में इसी बात को तीन शब्दों में कहा गया है– Being, Becoming, Bliss; भूः भुव, स्वः, सब–कुछ है, सब–कुछ हो रहा है, सब–कुछ आनन्द के लिए हो रहा है।

सारा संसार इस आनन्द के लिए अशान्त है, दौड़ रहा है इस आनन्द को पाने के लिए। भगवान् ने इस भूः, भुवः, स्वः की ऐसी भावना दे रखी है संसार को कि प्रत्येक वस्तु क्रियात्मक रूप में इसका जाप करती हुई आगे बढ़ती जाती है। मुँह से बोलो या न बोलो, क्रिया से लगातार यह जाप हो रहा है–भूः, भुवः, स्वः।

एक क्षण के लिए, एक क्षण के लाखवें भाग के लिए भी यह चक्र रुकता नहीं। इस नदी की गति रुकती नहीं। यह है आपका संसार। उपनिषद् के ऋषि ने कितने रहस्य की बात कितने थोड़े और सरल शब्दों में कह दी! भूः, भुवः, स्वः।

परन्तु इस चक्र से बाहर जाने और वास्तविक आनन्द को पाने का मार्ग क्या है? इस रहस्य को समझकर आनन्द के स्रोत के पास पहुँचो। एकाग्र होकर, ध्यान लगाकर उसको देखो जिसकी सविता–शक्ति भूः, भुवः, स्वः के इस चक्र को चला रही है, जो स्वयं भी भूः, भुवः, स्वः–सत्, चित्, आनन्द है। परन्तु इसे देखने के लिए पहली आवश्यकता है कि अपने चित्त की वृत्तियों को रोको चित्त को कहो कि अब और किसी ओर जाना नहीं, उस सच्चिदानन्द की ओर जाना है; और कुछ देखना नहीं, केवल उसको देखना है; और कुछ सोचना नहीं, केवल उसको सोचना है; और कुछ पाना नहीं, केवल उसको पाना है। चित्त की वृत्ति को रोककर किसी एक स्थान पर कोई सहारा बनाओ। हमारे भीतर तीन स्थान हैं जहाँ ध्यान लगाया जा सकता है। एक 'हृदय' जहाँ सीने की हड्डियाँ आकर छाती में मिलती हैं, वहाँ सबसे निचली पसलियों के मिलने के स्थान पर। दूसरा 'आज्ञा चक्र' दोनों भवों के मध्य, नाक से ऊपर माथे में जो स्थान है, वहाँ। तीसरे 'ब्रह्मरन्ध्र' में, तालु से ऊपर, सिर की हड्डी के नीचे, मस्तिष्क और खोपड़ी के मध्य एक रिक्तस्थान है, वहाँ। इन तीनों में से किसी भी स्थान पर ध्यान लगाओ। परन्तु एक बात स्मरण रक्खो। ध्यान के स्थान को बार–बार बदलो मत! एक स्थान चुनकर फिर उसे छोड़ो मत!

और यहाँ अपने लिए कोई सहारा बनाओ। ध्यान का सहारा बनाओ। ऐसी वस्तु का निर्णय करो जिसका तुम ध्यान कर सको। अच्छे सहारे दो हैं– एक प्रकाश, दूसरा ओम्– यह अक्षर जो ईश्वर का निज नाम है।

महर्षि पतजलि ने योगी के लिए जब कहा कि वह ध्यान करे, और जब यह भी कहा कि उस परम ब्रह्म का ध्यान करे, तब साथ ही कहा–

तस्य वाचकः प्रणवः।

'ओम् ही उसका नाम है।' दूसरे शास्त्रों ने भी कहा–

ओमित्येवं ध्यायेत् आत्मानम्।

'आत्मा का, उस ईश्वर का ध्यान करना हो तो ओम् का ध्यान करो।' सामवेद ने दूसरी बात कही–**द्युमन्त धीमहि–** 'उस प्रकाश का ध्यान करो, उस चमकनेवाली, जगमगाती ज्योति का। इसलिए दोनों में से किसी का ध्यान कीजिये, इसमें अन्तर नहीं पड़ता। और ओम् का ध्यान करनेवाला भी अन्त में देखता है कि उस अक्षर का स्थान एक ज्योति ले रही है। धीरे–धीरे बढ़ती जाती है। परन्तु यह प्रकाश क्या है?

सूर्य की किरणें प्रतिदिन हमारे पास आती हैं। उनसे प्रकाश मिलता है, गर्मी मिलती है, परन्तु अग्नि तो कभी नहीं लगती। अग्नि लगती है उस समय जब उन किरणों के समक्ष एक आतशी शीशा रख दिया जाये। इस शीशे में सूर्य की सहस्त्रों किरणें आती हैं; परन्तु यहाँ से आगे जाते समय सहस्त्रों नहीं रहतीं, सब मिलकर एक हो जाती हैं। यह एक किरण नन्हीं–सी, पतली–सी, एक बिन्दु–सी बनकर कपड़े पर, घास पर, अथवा किसी अन्य वस्तु पर गिरती है तो वह वस्तु जल उठती है। इस प्रकार हमारा आत्मा भी एक सूर्य है। उससे हजारों–लाखों किरणें निकलकर इस शरीर को चलाती हैं। इन किरणों को ध्यान के आतशी शीशे में समेटो। तब इस शीशे से एक छोटी–सी पतली–सी किरण बाहर आयेगी जो आनन्द–अग्नि को प्रज्वलित कर देगी।

यह है वह ज्योति जिसका ध्यान करना चाहिए। ज्यूँ–ज्यूँ ध्यान दृढ़ होगा, मन में एकाग्रता होगी और अभ्यास बढ़ेगा, त्यूँ–त्यूँ यह ज्योति बढ़ती जायेगी।

यह है विधि। मैंने बता दिया, परन्तु अब करना तो आपको है। मैं तो केवल मार्ग बता सकता हूँ। यदि इस मार्ग के सम्बन्ध में कुछ और जानना हो तो गुरु जी ब्रह्मर्षि श्री व्यासदेव जी महाराज की लिखी हुई पुस्तक 'आत्मविज्ञान' पढ़िये। इसमें उन्होंने सब बातें विस्तार पूर्वक लिखी हैं। यह शरीर अन्नमय कोश है–अन्न से बना हुआ। अन्न के आश्रय पर जीवित है। इसके अन्दर प्राणमय कोश है। उसके भीतर मनोमय कोश है जिसमें मन रहता है। उसमें विज्ञानमय कोश है जिसमें आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का सच्चा ज्ञान रहता है। इसके भीतर आनन्दमय कोश है। वह है परमात्मा का निवास–स्थान। एक के पश्चात् दूसरे कोश को– किले के एक द्वार के पश्चात् दूसरे द्वार को पार करते हुए इस अन्तिम कोश में, अन्तिम द्वार पर पहुँचिये तो फिर कहीं भी पहुँचना शेष नहीं रहता। वह मिल जायेगा जिसके मिलने के पश्चात् किसी की आवश्यकता नहीं रहती, जिसे पा लेने के पश्चात् किसी का पाना शेष नहीं रहता।

परन्तु कुछ दिन हुए एक सज्जन मेरे पास आये; बोले, "स्वामी जी! आपको एक बात कहूँ? बुरा तो नहीं मानेंगे?"

मैंने कहा, "नहीं भाई! बुरा नहीं मानूँगा। मैं तो पहले ही बुरा नहीं मानता था, फिर अब तो हो गया हूँ संन्यासी। प्रत्येक बात मुझे सुननी है। बुरा कभी मानता नहीं। आप जो कुछ कहना चाहते हैं प्रसन्नतापूर्वक कहिये।"

वे बोले, "स्वामी जी! आप व्यर्थ ही आत्मा और परमात्मा की बातें करते रहते हैं। संसार बहुत आगे बढ़ गया है। इन बातों में अब किसी को रुचि नहीं। आपको कथा करनी हो, भाषण देना हो तो किसी दूसरे विषय पर दीजिये। यह आप हर बार आत्मा–परमात्मा क्या ले बैठते हैं?"

मुझे उस भाई की बात बुरी नहीं लगी परन्तु, उसकी बात मैं मान नहीं

शेष पृष्ठ 6 पर ☞

स्वस्थ कैसे रहें? ऋग्वेद

● शिवनारायण उपाध्याय

नव जीवन में स्वस्थ शरीर का सर्वाधिक महत्व है। कोई भी व्यक्ति अस्वस्थ होने की इच्छा नहीं करता परन्तु फिर भी वह अनेक बार अस्वस्थ हो जाता है। ऐसा इसलिए होता है कि वह स्वास्थ्य के नियमों का मजबूती से पालन नहीं करता है। स्वस्थ रहने के लिए उसे निम्न बातों पर ध्यान देना होगा तथा कठोरता से उन्हें पालन करना होगा। संक्षेप में स्वस्थ रहने के लिए उसे निम्न बातों पर ध्यान देना होगा–(1) जल्दी सोवें और जल्दी उठें, (2) प्रातः जल्दी उठकर कुल्ला करके एक–दो गिलास जल पीवें तथा फिर मल–मूत्र विसर्जन करें, (3) मल–मूत्र विसर्जन के बाद प्रातः भ्रमण में कम से कम 5 कि.मी. पैदल चलें, भ्रमण न करना हो तो कोई शारीरिक व्यायाम करें, (4) भ्रमण अथवा व्यायाम के बाद शरीर शुद्धि के लिए स्नान करें, (5) इसके बाद कुछ समय के लिए ईश्वराधना करें तथा कुछ नाश्ता लें, (6) अल्पाहार के बाद अपने दैनिक व्यवसाय, नौकरी आदि पर जायें यदि कार्यालय दूर हो तो दोपहर का भोजन साथ ले जावें, (7) भोजन आदर्श होना चाहिए उसमें उन सभी तत्वों का उचित मात्रा में समावेश होना आवश्यक है जो शरीर की टूट–फूट को सुधार सकें तथा शरीर का विकास भी कर सकें, (8) मनुष्य को पुरुषार्थ से कभी भी जी नहीं चुराना चाहिए, पुरुषार्थ और उत्तम बुद्धि से ही सब कुछ प्राप्त होता है, (9) लगातार एक सा कार्य करते रहने से मनुष्य में थकावट अधिक आती है अतः बीच में कुछ समय के लिए दूसरे अन्य कामों को भी देख लेना चाहिए, (10) संध्या का कुछ समय मनोरंजन में भी लगाना चाहिए, (11) रात्रि भोजन के बाद थोड़ा ठहर कर जल्दी ही सोना चाहिए। अब हम ऋग्वेद के आधार पर इन्हीं पर विचार करते हैं।

ईयुष्टे ये पूर्वतरामन्व्युच्छन्तीमुषसं मर्त्यासः।

अस्माभिरू नु प्रतिचक्ष्याऽभूदो ते यन्ति ये अपरिषु पश्यान्। ऋ.1.117.11

भावार्थ– जो मनुष्य उषा के पहिले शयन से उठ आवश्यक कर्म कर के परमेश्वर का ध्यान करते हैं वे बुद्धिमान और धार्मिक होते हैं। जो स्त्री–पुरुष परमेश्वर का ध्यान करके प्रीति से आपस में बोलते चालते हैं वे अनेक विद्य सुखों को प्राप्त होते हैं।

आ श्येनस्य जवसानूतनेनास्मेयातं नासत्या सजोषाः।

हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया उषसोव्युष्टौ। ऋ.1.118.11

भावार्थ– स्त्री–पुरुष रात्रि के चौथे पहर में उठ अपना आवश्यक अर्थात् शरीर शुद्धि आदि काम कर फिर जगदीश्वर की उपासना और योगाभ्यास को कर अपने दैनिक आजीविका उपार्जन के काम में लग जावें। उसी प्रकार ऋ.1.124 ऋचा 10 में कहा गया है कि किसी को रात्रि के पिछले पहर में वा दिन में सोना नहीं चाहिए क्योंकि नींद और दिन के घाम आदि की अधिक गरमी के योग से रोगों की उत्पत्ति होने से तथा काम और अवस्था की हानि से जैसे पुरुषार्थ की युक्ति से बहुत धन प्राप्त होता वैसे सूर्योदय से पहिले उठकर यत्नवान् पुरुष दरिद्रता का त्याग करता है।

मनुष्यों को अपना काम निष्ठापूर्वक करना चाहिए! बिना पुरुषार्थ के व्यक्ति कभी भी ऐश्वर्य का स्वामी नहीं बन सकता है।

युक्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ अद्यरूणां उषः।

अथा नो विश्व सौभगान्या वह। ऋ. 1.92.15

पदार्थ– जैसे (वाजिनीवति) जिसमें ज्ञान और गमन कराने वाली क्रिया है वह (उषः) प्रातः समय की वेला (अरूणान्) लाल (अश्वान्) चमचमाती फैलती हुई किरणों का (युक्ष्व) संयोग कराती है (अथः) पीछे (नः) हम लोगों के लिए (विश्वा) सब (सौभगानि) सौभाग्यपन के कामों को अच्छे प्रकार प्राप्त कराती (हि) है जैसे (अद्य) आज तू शुभ गुणों को युक्त और (आ वह) सब ओर से प्राप्त कर।

वेद में आलस्य को मनुष्य का शत्रु माना गया है और कहा गया है कि वह आलस्य को छोड़ पुरुषार्थी बने इसी से ऐश्वर्य प्राप्त होगा।

युवाकु हि शचीनां युवाकु सुमतीनाम्। भूयाम वाजदान्नाम्। ऋ.1.17.4

पदार्थ– हम लोग (हि) जिस कारण (शचिनाम्) उत्तम वाणी व श्रेष्ठ कर्मों के (युवाकु) मेल तथा (वाजदान्नाम्) विद्या वा अन्न के उपदेश देने और (सुमतीनाम्) श्रेष्ठ विद्वानों के (युवाकु) पृथग्भाव करने को (भूयाम्) समर्थ होवें।

अब हम आदर्श भोजन के विषय में ऋग्वेद के आधार पर चिन्तन करते हैं। भोजन का कार्य है हमें कार्य करने हेतु ऊर्जा प्रदान करना, जीव कोशिकाओं की टूट–फूट की मरम्मत करना तथा नई कोशिकाओं का निर्माण करना, शरीर के ताप क्रम को बनाये रखना आदि। आदर्श भोजन में निम्न तत्व होते हैं– कारबोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, लवण, विटामिन्स और जल। इनका भोजन में उचित मात्रा में प्रयोग आवश्यक है। ऋग्वेद में शाकाहारी भोजन का समर्थन किया गया है! शाकाहारी भोजन ये सब पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं जैसे गेहूँ, जौ, जुआर, मक्का आदि की रोटी से कारबोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो जाता है। विभिन्न दालें प्रोटीन प्रदान कर देती हैं, विभिन्न सब्जियों और फलों से लवण एवं विटामिन्स भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो जाते हैं, भोजन में काम आने वाला घी और तेल वसा की पूर्ति कर देते हैं! साथ ही प्रातः एवं सायं पिया जाने वाले दूध तो आदर्श भोजन का कार्य करता है। स्वच्छ जल का प्रयोग दिन में कई बार करते हैं।

खदोरभक्षि वयसः सुमेधाः स्वाध्यो वरिवोवित्तरस्य।

विश्वे यं देवा उत मर्त्यासो मधु ब्रुवन्तो अभि सञ्चरन्ति। ऋ. 8.48.1

पदार्थ– मैं (वयसः) अन्न (अभक्षि) खाऊँ। हम मनुष्य जाति अन्न खायें किन्तु मांस न खायें। अन्न कैसा जो (स्वादो) स्वादिष्ट हो जो (वीखोवित्तरस्य) सत्कार के योग्य हो जिसको देखकर ही प्रसन्नता हो। पुनः (यम्) जिस अन्न को (विश्वे) सम्पूर्ण (देवा) श्रेष्ठ पुरुष (उत्त) और (मर्त्यासः) साधारण मनुष्य (मधु ब्रूवन्तः) मधुर कहते हुये (अभि संचरन्ति) खाते हैं। उस अन्न को हम कब खायें। खाने वाले कैसे हों (सुमेधाः) सुमति और बुद्धिमान हों और (स्वाध्यः) सुकर्मा स्वाध्यायशील और कर्मपरायण हों।

अन्तश्च प्रागा अदितिर्भवास्यवयाता हरसो दैव्यस्य।

इन्दविन्द्रस्य सख्यं जुषाणः श्रौष्टीव धुरमनुराय ऋध्याः। ऋ.8.48.2

पदार्थ– (इन्दो) हे अन्न श्रेष्ठ। (च) पुनः जब तू (अन्तः) हृदय के भीतर (प्रागाः) जाता है जब तू (अदितिः) उदार होता है। पुनः (दैव्यस्य हरसः) दिव्य जीव का भी (अवयाता) दूर करने वाला होता है। पुनः (इन्द्रस्य) नीव का (सख्यम्) हित (जुषाणः) सेवता हुआ (राये, अनु ऋध्याः) ऐश्वर्य की ओर ले जाता है। ऐसे ही (श्रोष्टी इव वुरम्) शीघ्रगामी अश्वरथ को प्रदेश में ले जाता है।

भावार्थ– जड़ वस्तु को सम्बोधित कर चेतनवत् वर्णन करने की रीति वेद में है। ऋचा का आशय यह है– जब वैसे मधुमान् अन्न शरीर के भीतर जाते हैं तो उनसे अनेक सुगुण उत्पन्न होते हैं। इनसे शुद्ध रक्त और मांस आदि बनते हैं। शरीर की दुर्बलता नहीं रहती है। मन प्रसन्न रहता है। शरीर निरोग और पुष्ट रहने से दिन–दिन धनोपार्जन में मन लगाता है। अतः कहा जाता है कि अन्न क्रोध को दूर करता है।

अपाम सोमममृता अभूभागन्म ज्योतिर विदाम देवान्।

किं नूनमस्मान्कृणवदरातिः किमु धूर्तिरमृत मर्त्यस्य। ऋ.8.48.3

पदार्थ– (सोम) हे सर्वश्रेष्ठ। रसमय अन्न (अपाम्) तुमको हव पीवें। (अमृता अभूम) अमृत होवे (ज्योति अगन्म) शरीर शक्ति या परमात्म ज्योति को प्राप्त हों। (देवान्) इन्द्रिय शक्तियों को (अविदाम) प्राप्त करें (अस्मान्) हमारा (नूनम्) इस अवस्था में (अरातिः) आन्तरिक शत्रु (किं कृणवतु) क्या करेगा (अमृत) हे ईश हे मरण रहित देव। (धूर्ति) हिंसक जन (मर्त्यस्य) मरण धर्मी भी मुझको (किम्) क्या करेगा।

शं नो भव हृद आ पीत इन्दो पितेव सोम सूनवे सुशेवः।

सखेव सख्य डरुशंस धीरः प्र ण आयु जीवसे सोम तारीः। ऋ. 8.48.4

पदार्थ– (इन्दो) हे आ ह्लादप्रद (सोम) हे सर्व श्रेष्ठरस तथा शरीर पोषक अन्न। तू (पीतः) हम जीवों से पीत और मुक्त होकर (नःहृदे) हमारे हृदय के लिए (शम् आ भव, कल्याणकारी हो। यहाँ दो दृष्टान्त देते हैं। (पिता इव सूनवे) जैसे पुत्र के लिए पिता सुखकारी होता है। पुनः (सखा इव) जैसे मित्र मित्रों को (सख्ये) मित्रता में रखकर (सुशेवः) सुखकारी होता है तद्वत्। (उसशंस सोम) हे प्रशंसनीय सोम। (धीरः) तू धीर होकर (जीवसे) जीवन के लिए (नः आयुः) हमारी आयु (प्र तारीः) बढ़ा दे।

भावार्थ– ऐसा अन्न और रस खाओ और पियो जिससे शरीर और आत्मा को लाभ पहुंचे और आयु बढ़े। इसी विषय को आगे बढ़ाते हुये वेद कहता है–

इमेमा पीता यशस उरूष्यवो रथं न गावः समनाह पर्वसु।

ते मा रक्षन्तु विस्रसश्चरित्रादुरू मा सामाद्यवयनिवन्दवः। ऋ 8.48.5

भावार्थ– हम मनुष्य ऐसा अन्न खाएं जिसने शुभ चरित्र भ्रष्ट न हो। शरीर को फुर्ती और वीरता प्राप्त होवे। उत्तेजक मद्यादि न पीवें जिससे चरित्र भ्रष्ट हो और व्याधियां बढ़ें। अन्न के खान पान पर पूरा ध्यान रखे तथा विधि पूर्वक उसे सेवन करें।

अगली ऋचा में कहा गया है कि हम ऐसा अन्न सेवन करें जिससे वह अग्निवत् तेजस्वी भासित हो, नेत्र की ज्योति बढ़े और वह दिन–दिन धनवान ही होता जाये। जब जब अन्न प्राप्त हो तब तब ईश्वर को धन्यवाद दे और सदैव अदीन भाव से रहे।

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

अन्धविश्वास की ओट में फलता-फूलता ताबीज का धंधा

● सत्यदेव प्रसाद आर्य

आये दिन ज्ञान और विज्ञान चाहे जितना भी तरक्की के पायदान चढ़ता जाय-मंगल, बुद्ध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, चन्द्रमा पर अपना वर्चस्व स्थापित हो जाय, हमारा मानव मन आज भी किसी न किसी कल्पित और भयावह शक्ति की गिरफ्त से बचने और उबरने की चेष्टाओं के लिये प्रयास और उपाय करने में कोई कोताही नहीं करता। स्वास्थ्य और पारिवारिक समस्याओं के निदान के लिये संक्षिप्त और सरल राह से निकलने की जुगाड़ भिड़ाने में कोई कोर कसर नहीं रखता।

इस मानवीय अज्ञानता और कमजोरी को भाँपकर समाज में ओझा, गुणी और कथित भगत अपनी पौ बारह करते रहते हैं। कुपोषण के शिकार मरीज को अपने आत्मीय जनों को हम दवा, दूध और पोषक की जुगाड़ करके राहत नहीं दे पाते परन्तु उससे अधिक खर्च करके जाप, पुरश्चरण या ताबीज बनाकर निजात पाने की मृग मरीचिका में फंस जाते हैं। घर के मुखिया को रो-झींक कर ग्रह दशा को ठीक करने के नाम पर सारी व्यवस्था करनी ही पड़ती है। चाहे वह सुदूर ग्रामीण अस्पर्शीय इलाका हो या शहरों का उन्नत गहमागहमी का स्थान। अज्ञान और अन्ध नये विश्वास नये रूप धर कर हम पर हावी होता ही रहता है। अज्ञात भूत-प्रेत जिन्न की कपोल कल्पना के शिकार दीन से दीन और अमीर से अमीर को अपने शरीर पर स्पर्श करने वाले तन्त्र-मन्त्र अभिषिक्त कथित ताबीज-धागे से सुशोभित लोगों को सरेराह, हाट बाजार, भीड़ भाड़ वाली जगहों पर एक से एक डिजाइन, भिन्न-भिन्न आकार प्रकार के मौली धागे, प्लास्टिक एवं धातु के निर्मिति यन्त्र को देखने का अवसर भला किसे नहीं मिला होगा। चाहे वह सुडौल शरीर का मालिक हो या सींकिया पहलवान। मरियल लुज-लुज बूढ़ा हो या नवजात सब इस आधुनिक ट्रान्स-मीटर से लैस मिलते हैं।

झाड़-फूँक के बाजार में इस विशेष व्यवस्था से स्थायित्व मिलने की घोषणा सुनने को मिलती है। यन्य-मन्त्र देने वाले इसकी सिद्धि के लिये ढेरों अतिशयोक्तियों, शक्तियों का प्रचार करते रहते हैं। श्मशान सिद्धि, भूत बैताल पर पकड़ आदि की विशद प्रस्तुति, प्रसिद्धि आदि उपस्थित कर पूर्णतः भरोसा दिलाने का यत्न किया करते हैं।

कहते हैं एक दम्पत्ति को सन्तान नहीं हो रही थी। पास पड़ोस के लोगों से किसी सोखे का पता मिला। सोखे से मिलने पर उसने अनुष्ठान कर ताबीज देने की पहल की। दैवयोग से दम्पत्ति को सन्तान की प्राप्ति हो गई। बच्चा हो जाने पर परिवार के लोग सोखे से मिले, मनमानी भेंट पूजा दी। सोखे ने दिये हुये ताबीज की मांग की और परिवार के सामने उसको खोलकर उसमें रखे भोजपत्र पर लिखा 'सात अक्षर' दिखाया जिसमें लिखा था 'लड़का ना लड़की। लड़का होने वाले दम्पत्ति को पढ़कर सुनाया देखिये हमने पहले ही लड़का होने का आशीर्वाद दे दिया था। लड़का- ना लड़की। जिसको लड़की हुई उसे पढ़कर सुनाया लड़का ना-लड़की और जिसे कुछ नहीं हुआ उसे लड़का ना लड़की हमने प्रारब्ध को जानकर घोषण ाा कर दी थी कि तुझे कुछ नहीं होगा। इसी अनुष्ठान की आड़ में व्यभिचार, भ्रष्टाचार, गुण्डा-गर्दी भी होती रहती है। भोली भाली जनता सब सहते हुये भी बदनामी के डर से कुछ नहीं बोल पाती। ठगी का धन्धा पूरे नेटवर्क से धड़ल्ले से होता रहता है।

सत्य सनातन वैदिक धर्म की प्रचार शिथिलता के कारण परम्परागत बिन्दुओं की आड़ में जोरों से आज भी चारों ओर चल रहा है धंधा। हमने ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार-प्रसार करना छोड़ दिया है। आलस्य, प्रमाद, वैमनस्यता से परस्पर सम्पर्क सहयोग का अभाव चारों ओर सुरसा की तरह फैल रहा है। ताबीज और उससे जुड़ी सामग्रियों का अच्छा खासा बाजार इधर दश अब्दियों से निर्विरोध गतिमान है।

1. एक नजर में सामग्रियों का ब्यौरा, धातु के- उल्टे सीधे चाँद, ताबीज-बजरंग बली हनुमान अंकित, तु साईं बाबा बालयोगेश्वर, धन निरंकार आदि छपे, ईसा का क्रास, 15 या 30 के वर्ग अंकित शोभित, घोड़े की नाल से बनी अंगूठी, दायें बायें घुमाये कील आदि। पंजाबियों जैसे हाथ के कंगन, कड़े ब्रेसलेट।

अनुष्ठान में- पंचरत्न, नौका के कील, सूई सीधे और उल्टे, नाग-नागिन, कछुआ, वाराह, मछली, तारा की आकृति के यन्त्र।

2. जीव जन्तुओं से प्राप्त- हाथी के दाँत, भालू के केश, कस्तूरी, गौलोचन, सर्प का केंचुल, शेर की खाल, शाही के शरीर के कांटें, मोरपंख, किसी की पूँछ-मूँछ और नाखून, अमुक की हड्डी आदि।

3. पौधों से प्राप्त- केसर, भोजपत्र, मिर्च उलटे-सीधे, हींग, सरसों उलटे-सीधे, अजवाईन, बेलपत्र, कांटे, बबूल, गोखरू, सेंहुड़ के कांटे, वंशलोचन, अच्छत, अनार की कलम, चिड़चिड़ी, दूब, गुलाब जल, तुलसी दल, तुलसी के मांजर, शमीवृक्ष की लकड़ी, खैर की लकड़ी, धागे में पिरोये नीम्बू और मिर्च, लौंग के फूल, मलयागिर चन्दन, रक्त चन्दन, मकड़ी का जाल, नवग्रह की लकड़ी आदि।

4. अन्यान्य- इत्र, रोली, मौली, धूप, दीप, नैवेद्य, अगरबत्ती सलाय, भभूत (राख)।

5. फल- फूल, पेड़े, गंगाजल, मिष्ठान, मेवा, मिसरी।

6. वाम मार्गियों द्वारा- बलि के लिये- कबूतर, मुर्ग के चूजे, पाठा (बकरी का बच्चा)।

7. कौतूहल उत्पन्न करने वाले, चटक-मटक दिखलाने वाले सामान-

– कटहल के दूध से भिगोये चाकू से नीबू काटने पर मानव रक्त जैसा टपका कर दिखाना।

– परमैंगनेट आफ पोटाश पर ग्लीसरीन गिरा कर कृत्रिम आग उत्पन्न करने की व्यवस्था।

– गुड़मार बूटी के पत्ते खिलाकर चीनी या मीठे को बेस्वाद कर देने की प्रक्रिया।

– पीपरमेन्ट, अजवाइन का सत्व और कर्पूर के मिश्रण से प्रसिद्ध अमृतधारा के प्रयोग से दर्द से तत्काल छुटकारा दिलाना।

– मकड़ी के जाल को गरम पानी में घोल कर पिलाने से सुख पूर्वक प्रसव करवाना।

– अपामार्ग की जड़ को गर्भिणी की कमर में बान्ध कर तत्काल शिशु को प्रसव करा कर बाहर निकालना।

– नौसादर और चूने के मिश्रण को सुंघाकर बेहोशी दूर करना। मिरगी आदि में तथा बिच्छू के डंक मारने पर पीड़ा दूर करना।

– तत्काल के मारे गये साँप पर किरासन तैल टपका कर जिन्दा जैसा कर देने का उद्यम।

– इसलिये आँखें खुली रखें और दूसरों का भ्रमोच्छेदन करें।

बीज से संसार में सृष्टि का क्रम चलता है। ताबीज से अज्ञान, अन्ध विश्वास, मूर्खता और भय पालता है। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

भरमाने वाले अंक गणित के कोष्टक

8	1	6
3	5	7
4	9	2

10	3	8
5	7	9
6	11	4

12	5	10
7	9	11
8	13	6

13	6	11
8	10	12
9	14	7

14	7	12
9	11	13
10	15	8

'मरूत', आर्य समाज नेमदारगंज
(नावादा-बिहार)

www.thearyasamaj.org

राष्ट्रीय स्वाभिमान की खातिर

● राजेन्द्र प्रसाद आर्य

आज भारत के राजनैतिक क्षितिज पर आतंकवादियों की हिट लिस्ट में जो नाम सबसे ऊपर है, एवं तथाकथित धर्मनिरपेक्ष राजनेताओं के बीच जिस नाम को लेकर सर्वाधिक हड़कम्प मचा हुआ है, तथा देश का जनमानस जिस नाम को प्रधान मंत्री के रूप में देखने को बेचैन है, वह नाम है नरेन्द्र मोदी का। इसे इस देश का सौभाग्य ही समझा जाना चाहिए कि आजादी के बाद प्रथम वार एक ऐसा राजनेता प्रधानमंत्री के रूप में देश को मिलने जा रहा है, जिससे देश की खोए मान। सम्मान प्रतिष्ठा एवं गौरव सब एक साथ पूरे विश्व में स्थापित हो सकते हैं। आज नरेन्द्र मोदी महज एक नाम ही नहीं बल्कि प्रतीक बन चुका है विकास एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान का, और सबसे बड़ी बात तो इनमें यह है कि ये एक मात्र ऐसे राजनेता हैं जिनके रगों में राम और कृष्ण का खून दौड़ रहा है, जिस वजह से इनके नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वाभिमान और हिन्दू हितों की रक्षा हो सकती है।

अब तक जितने भी पूर्णकालिक प्रधानमंत्री इस देश को मिले हैं प्रायः सबों ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को चोट ही पहुंचायी है, एवं हिन्दू हितों की उपेक्षा ही की है। हमारे प्रथम प्रधानमंत्री तो स्वयं गोमांस के भक्षक थे तथा जिन्होंने हिन्दू परिवार में जन्म लेना सौभाग्य नहीं बल्कि संयोग माना था, वो भला हिन्दू हितों की रक्षा क्यों करते। और हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री तो देश की समस्त राष्ट्रीय सम्पदाओं में पहला अधिकार तो मुसलमानों का ही बता चुके हैं तो फिर हिन्दुओं के लिए क्या बचता है, तो भला इनसे भी हिन्दू हितों की रक्षा की उम्मीद कैसे की जा सकती है।

आजादी की शर्त पर जो हिस्सा भारत से काटकर पाकिस्तान बनाया गया था, वहाँ आज हिन्दुओं की क्या स्थिति है, बंटवारे के समय वहां हिन्दुओं की संख्या 22 प्रतिशत थी वहीं आज घटते-घटते नगण्य हो गई है जिसकी शुरूआत ही 1947 के बंटवारे के उपरान्त भयंकर रक्त पात से हुई थी जिसमें करीब 10 लाख हिन्दू और सिक्खों का कत्लेआम हुआ था और करीब 3 करोड़ लोग विस्थापित हुए थे। क्या कभी किसी प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान के समक्ष जोरदार तरीके से इस मुद्दे को उठाया है? क्या विडम्बना है कि करीब 8 करोड़ बंग्लादेशी मुसलमान घुसपैठियों को भारत में शरण दी गई है, वहीं पाकिस्तान में भयंकर यातनाओं के शिकार प्रति महीने करीब 50 हिन्दू परिवार भागकर भारत आते हैं जिसे हमारी सरकार शरण देने में आनाकानी करती है। आखिर कैसी है हमारी सरकार की धर्म निरपेक्षता? दूसरे देश की तो बात छोड़ दें अपने ही देश में कश्मीर आज हिन्दू विहीन हो गया है, तथा लाखों हिन्दू और कश्मीरी पंडितों को कश्मीर से भागना पड़ा है। जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल श्री जगमोहन का यह बयान देश के लिए कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि पिछले 20 वर्षों में कश्मीर में करीब 60,000 हिन्दू मारे गए हैं। आज भी आतंकी हमलों में मुख्य रूप से हिन्दू ही मारे जा रहे हैं। 26/11 को मुम्बई में हुए आतंकी हमले भी कुल 166 लोग मारे गये थे, उसमें मुख्य रूप से हिन्दू ही थे। रक्षा विशेषज्ञ श्री जे.डी. बक्शी के अनुसार अबतक आतंकवाद की चपेट में पंजाब में 20,000 कश्मीर में 40,000 तथा देश के अन्य भागों में 5,000 कुल 65,000 निर्दोष नागरिकों की हत्या हो चुकी है। तो आखिर कौन है इन हत्याओं का असली मुजरिम? हमारी सरकार कभी भी इन आतंकी हमलों को रोक पाने में आक्रामक नहीं रही है, हमेशा ही रक्षात्मक रही है जिस वजह से इन आतंकियों के हौसले बुलन्द हैं। हमारी सरकार को अपने इतिहास से नहीं तो कम से कम 1.25 करोड़ आबादी वाले एक छोटे से देश इजराइल से प्रेरणा लेनी चाहिए। सिर्फ हिन्दू और हिन्दूहितों की ही बात नहीं है, हिन्दुओं की भावना का भी ख्याल नहीं किया जाता है। सत्ता हस्तांतरण के समय अंग्रेजों द्वारा थोपी गई घातक शर्तों का इससे बड़ा और क्या उदाहरण हो सकता है कि आज भारत में प्रतिवर्ष लगभग 1 करोड़ गायों की निर्मम हत्या की जा रही है।

अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण को कटिबद्ध संगठनों से भी हम अपील करना चाहते हैं कि मन्दिर तो हम बाद में भी बना लेंगे, पर अभी बड़ी चुनौती है लुप्त होती जा रही हिन्दू प्रजाति और हिन्दुत्व की रक्षा करना।

इस देश की आर्थिक स्थिति भी कम भयावह नहीं है, आजादी के 65 साल बाद भी इस देश में 78 प्रतिशत ऐसे लोग जो 84 करोड़ होते हैं की प्रतिदिन की आमदनी 20 रु. है जिस वजह से वे कीड़े मकोड़ों की जिन्दगी जी रहे हैं और इसी वजह से उनके बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे हैं। आज इस देश में प्रतिदिन करीब 4300 बच्चों को मौत 5 वर्ष तक की उम्र में ही हो जाती है।

इसलिए राजनैतिक परिदृश्य में मैं तो इस देश को उस बस के रूप में देख रहा हूँ जिसकी ड्राइविंग सीट पर धर्मनिरपेक्षता की स्टेयरिंग थामे कांग्रेस बैठी हुई है, पूरी बस की केबिन में भ्रष्टाचारी, माफिया सरगना, कालेधन के व्यापारी तथा कारपोरेट घरानों के लोग बैठे हैं। बस में ईंधन मल्टीनेशनल कम्पनी ने भरवा दी है। इस बस की खासियत है कि इसकी सभी सीटों पर अल्पसंख्यक समुदाय के लोग बैठे हुए हैं जबकि बहुसंख्यक समाज के लोग बस के पायदान पर लटके हुए हैं, क्योंकि बस का संवाहक भी मुलायम सिंह यादव सरीखा धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति है। स्मरण रहे कि मुलायम सिंह यादव की सरकार ने आतंकियों पर से सारे मुकदमे वापस लेने का फैसला लिया है जिसपर न्यायालय ने रोक लगा दी है। इस बस में लालू यादव जैसा ही एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति सहायक है जो अल्पसंख्यकों के सामानों की निगरानी बड़ी ही निष्ठापूर्वक कर रहा है। अभी अभी श्री नीतीश कुमार भी दूसरी बस से उतरकर इस बस में सवार हुए हैं। यह बस कश्मीर में हिन्दुओं की बर्बादी की जायजा लेते हुए केरल से बाकी राज्यों का दौरा कर दिल्ली लाल किला तक जायेगी। इस बस को रोकने के लिए मात्र एक व्यक्ति आमादा है, और वह है स्वामी रामदेव।

अंत में मैं सभी राष्ट्रवादी व्यक्तियों से अपील करता हूँ कि स्वामी रामदेव ने तो चाणक्य की भूमिका निभाने के स्वीकृति दे रखी है और अब आप सब विकास एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा हिन्दुओं के भी हितों की रक्षा के लिए नरेन्द्र मोदी को चन्द्रगुप्त की भूमिका के लिए प्रधानमंत्री के रूप में राजतिलक करें, ताकि लालकिला मर्दानी भाषा में गर्जना करे।

आर्यसमाज, मुजफ्फरपुर (बिहार)

☞ *पृष्ठ 3 का शेष*

घोर घने जंगल में

सकता। मैं जानता हूँ कि संसार बहुत आगे नहीं, बहुत उलटे मार्ग पर चला जाता है। मैं जानता हूँ कि संसार को आत्मा और परमात्मा की बातें नहीं, उसे केवल एक चिन्ता है कि रुपया किस प्रकार पैदा करना है और कमाकर उसे नष्ट कैसे करना है। इसे शासन चाहिए, शक्ति चाहिए, धन चाहिए, सम्पत्ति चाहिए, सोना और चाँदी चाहिए, मोटर और हवाई जहाज चाहिए। नहीं चाहिए तो शान्ति नहीं चाहिए जिसके लिए इन सब वस्तुओं की इच्छा उसके हृदय में उत्पन्न होती है। आज यहाँ घोषणा कर दीजिये कि आनन्दस्वामी गंगोत्री के किसी महात्मा से सोना बनाने की विधि सीखकर आया है और आर्यसमाज रीडिंग रोड में यह विधि बतायेगा; सोना बनाकर भी बतायेगा और इसके पश्चात् उत्सव में आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को सोने की एक माला भी देगा तो देखिये कि यहाँ क्या होता है? आर्यसमाज के इस हॉल के भीतर ही नहीं इससे बाहर भी दूर-दूर तक तिल धरने को स्थान नहीं रहेगा। आज घोषणा कर दीजिये कि अमुक फिल्म-ऐक्ट्रेस अपना गीत सुनायेगी, नाच भी दिखायेगी और टिकट नहीं होगा तो देखिये कि यहाँ क्या होता है। आज घोषणा कर दीजिये कि आनन्दस्वामी हिमालय से बूटी ले आया है। भाषण के समय सबको यह बूटी देगा और जिसके पास बूटी होगी उसे अपने-आप महल-जैसा एक मकान मिल जायेगा; स्वयमेव वह मन्त्री बन जायेगा; संसद का सदस्य बन जायेगा; पंजाबी सूबा वालों को पंजाबी सूबा मिल जायेगा; दिल्ली-वालों को महादिल्ली मिल जायेगी; महाराष्ट्रवालों को बृहत्तर महाराष्ट्र मिल जायेगा; गुजरातवालों को बम्बई मिल जायेगी और दूसरे व्यक्तियों को दूसरी वस्तुएं मिल जायेंगी तो देखिये कि क्या ठट्ठ यहाँ लगते हैं। परन्तु आनन्द स्वामी यह बात तो नहीं कहता। वह कहता है आत्मा और परमात्मा की बात। उस आनन्द की बात जिसके समक्ष सोने के पहाड़ तुच्छ हैं, चाँदी के ढेर व्यर्थ हैं। जो सुन्दर-से-सुन्दर कलाकारों को लाखों और करोड़ों की संख्या में एक संकेत से उत्पन्न और समाप्त कर देता है। जो बड़ी-बड़ी शक्तियों को जन्म देता है और फिर उन्हें समाप्त कर देता है जैसे कोई नहर सागर में सो गई हो। उसकी बात कौन सुनना चाहता है?

शेष अगले अंक में....

हिन्दुओं की कमज़ोरियां

● कृष्ण चन्द्र गर्ग

हिन्दुओं में कुछ कमियां और कमजोरियां हैं जिनके कारण वे भारत में 80% होते हुए भी प्रभावहीन हैं। प्रस्तुत लेख में उन कमियों पर विचार किया गया है ताकि हिन्दू जाति उन पर चिन्तन करके अपनी कमजोरियों को दूर करके उन्नत हो तथा देश और विश्व में प्रभावशाली भूमिका निभा सके।

1. धर्मगुरुओं के गलत उपदेश – हिन्दुओं के धर्मगुरु उन्हें वीर, बहादुर, पराक्रमी, आत्मस्वाभिमानी, देशभक्त तथा परोपकारी बनने का उपदेश नहीं देते। वे उन्हें अपने बल, बुद्धि का प्रयोग करना भी नहीं सिखाते, वे उन्हें अन्धविश्वासी बनाकर गुरु पर आश्रित रहना सिखाते हैं। वे उन्हें शुभ कर्म करने की शिक्षा देने की बजाए अच्छे–बुरे सब प्रकार के कर्म गुरु को अर्पण करने का उपदेश देते हैं। इस प्रकार हिन्दू मानसिक और बौद्धिक रूप से कमजोर और कायर बनकर गुरु के सहारे बैठ जाते हैं और उसे दक्षिणा के रूप में धन देते रहते हैं।

2. ईश्वर की गलत अवधारणा – ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्व अन्तर्यामी है। वह सारी सृष्टि को बनाने वाला है। वह हमारे सब अच्छे, बुरे कार्यों को देखता और जानता है तथा उनके अनुसार हमें सुख और दुख के रूप में फल देता है। ईश्वर के इस सत्य स्वरूप को न मानकर मिट्टी के खिलौनों को ईश्वर मान लेना, उनके आगे हाथ जोड़ देना, सिर झुका देना, भोजन परोस देना कोरी अज्ञानता के सिवाए और क्या है

3. कर्म व्यवस्था को स्वीकार न करना – जैसा अच्छा बुरा कर्म मनुष्य करता है वैसा ही फल उसे ईश्वर की व्यवस्था से मिलता है। ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है, वह कोई सिफारिश नहीं मानता, रिश्वत नहीं लेता। अच्छे और बुरे कर्मों के फल भोगकर ही समाप्त होते हैं। उनसे बचने का कोई भी उपाय नहीं है। फिर भी हिन्दू जाति कोई विपत्ति आने पर उसका कारण ग्रहों–नक्षत्रों को मानती है और इधर उधर ढोंगियों से उपाय करवाती फिरती है। ज्योतिषी के नाम से ढोंगी लोग ऐसे मानसिक रूप से कमजोर लोगों को झूठे आश्वासन देकर उनका धन लूटते हैं।

4. धर्म की गलत अवधारणा – मन, वचन, कर्म से सत्य का आचरण, पक्षपात रहित न्याय, परोपकार , सदाचार आदि ही धर्म हैं। पत्थर की मूर्ति पर दूध डालना और पेट भरे पण्डित को खिलाना, जनेऊ, पहनना, चोटी रखना आदि कर्म धर्म नहीं हैं। धर्म का सम्बन्ध शुद्ध आचरण से है, दिखावे और आडम्बर से नहीं।

5. मूर्तिपूजा को ईश्वर की पूजा मानना – मूर्तिपूजा ईश्वर की पूजा नहीं है। ईश्वर की पूजा तो हो ही नहीं सकती। उसे हमारी पूजा की जरूरत भी नहीं। वह कभी प्रसन्न या अप्रसन्न नहीं होता। वह तो सदा आनन्द स्वरूप है। मूर्तिपूजा व्यर्थ है। इसने आज तक हिन्दुओं को दिया ही क्या है? मूर्तिपूजा के कारण हिन्दू जड़बुद्धि, विवेकहीन और शुभ कर्म विहीन हो गए हैं। हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को मुसलमान हमलावरों और शासकों ने तोड़ा और लूटा है। कोई एक मूर्ति किसी आक्रमणकारी की एक टांग भी न तोड़ सकी।

अनेक लड़ाइयां हिन्दुओं ने मूर्ति में शक्ति के झूठे विश्वास के कारण मुसलमानों से हारी हैं जिनके परिणामस्वरूप हिन्दुओं को भयानक रक्तपात, लूटपाट और दासता झेलनी पड़ी है।

6. गलत और प्रक्षिप्त साहित्य –हिन्दुओं ने अपने असली और सही साहित्य चार वेदों –ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद–को तो भुला दिया है। गप्पों से भरे अठारह पुराणों को अपना लिया है। पुराणों के अन्दर ज्यादातर बातें झूठी, असम्भव, अनैतिक और अश्लील हैं। हिन्दू बेशक इन पुराणों को पढ़ते तो बहुत कम हैं पर पण्डित लोग इन्हीं पुराणों के आधार पर कथा–वार्ता और उपदेश करते हैं। हिन्दू ऐसे उपदेशों को ही सुनते हैं, उन पर विश्वास करते हैं। ऐसे उपदेशकों को विद्वान मानते हैं और पुराणों को ही असली धर्म ग्रन्थ मानते हैं। जैसा साहित्य वैसी बुद्धि। इसलिए हिन्दुओं की बुद्धि तार्किक नहीं है।

हिन्दू साहित्य की दूसरी बड़ी समस्या है कि रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों में बड़ी भारी मिलावट है जैसे गंगा गंगोत्री से चली तो पूरी तरह स्वच्छ और पवित्र है परन्तु आगे आकर गन्दगी मिलने से दूषित हो गई है। पर हिन्दू इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते, करते भी हैं तो नीर–क्षीर करने की जरूरत नहीं समझते। इसलिए हिन्दू अविद्या–अन्धकार में फंसे रहते हैं।

7. झूठी आस्था – हिन्दुओं में तार्किक बुद्धि और वैज्ञानिक सोच का अभाव है। आस्था के नाम पर वे बुद्धि को ताक पर रखकर हर गलत बात को सही और असम्भव को सम्भव मान लेते हैं। झूठ मनुष्य को उन्नति की ओर नहीं ले जा सकता, वह तो अवनति की ओर ही ले जाता है। रेत को खाण्ड मानने से वह खाण्ड नहीं बन जाता। आस्था सत्य पर ही आधारित होनी चाहिए, झूठ पर नहीं। इसीलिए हिन्दू भ्रमजाल में फंसे रहते हैं।

8. सभी मजहब एक से हैं की झूठी धारणा – प्रायः करके, हिन्दू माने बैठे हैं कि सभी मजहब एक ही सत्य ईश्वर की ओर ले जाते हैं। यह बात उतनी ही गलत है जितनी कि कह देना कि चण्डीगढ़ से सभी रास्ते दिल्ली को जाते हैं। सभी सम्प्रदायों में ईश्वर, जीवात्मा, कर्मफल, पुनर्जन्म आदि की अवधारणाएं अलग–अलग हैं। मुसलमान तो गैर–मुसलमान को यातनाएं देना और जान से मार देना स्वर्ग में जाने का साधन मानते हैं। हिन्दुओं को छोड़ सभी सम्प्रदाय अपने–अपने सम्प्रदाय को सबसे बढ़िया बताते हैं और उसे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। वैदिक धर्म की मान्यताएं सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी हिन्दू उन्हें फैलाने का प्रयास नहीं करते क्योंकि हिन्दू उनसे अनभिज्ञ हैं और जानने की इच्छा भी नहीं रखते। सरकार द्वारा प्रसारित 'सर्वधर्म समभाव' की झूठी धारणा को हिन्दू गले लगाए हुए हैं और झूम–झूम कर झूठा गीत गाया जाता है– मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना। इसलिए हिन्दू सदा घटाओ की स्थिति में रहे हैं, इन्होंने बढ़ाओ की ओर कभी ध्यान नहीं दिया।

9. मूर्ति में प्राण–प्रतिष्ठा – वेद ने ईश्वर को शरीर रहित (अकायम्), अजर, अमर, अजन्मा, नित्य और पवित्र बताया है। परन्तु हिन्दुओं ने अपनी कल्पना से अलग–अलग तरह के भगवान बना लिए हैं। ईश्वर का विषय मन और आत्मा से सम्बन्धित है परन्तु मूर्तिपूजकों ने इसे आँख का विषय बना लिया है। पण्डितों द्वारा मूर्ति में प्राण–प्रतिष्ठा का ढोंग भी हिन्दुओं को समझ में नहीं आता। साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी जानता है कि पत्थर की मूर्ति में न तो देखने–सुनने की शक्ति है, न उसमें कुछ समझने या करने की शक्ति है, न ही उसमें प्राण पड़ सकते हैं। पुजारी तो धन ऐंठने के लिए हिन्दुओं को बेवकूफ बनाते हैं। पर हिन्दू क्यों मूर्ख बनते हैं यह बात समझ से परे है।

10. गरीबों के प्रति सहानुभूति की कमी – हिन्दुओं में दान देने की प्रवृत्ति तो है, पर देते गलत जगह पर हैं। वे निठल्ले और पेट भरे पण्डितों को दान देते हैं जो महापाप है। दान तो जरूरतमन्द को देना चाहिए और विद्या के प्रसार के लिए देना चाहिए। बेरोजगारों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने चाहिएं, कल–कारखाने लगाने चाहिएं। ईश्वर के नाम पर मन्दिर में देना अपने आपको धोखा देना है क्योंकि ईश्वर देता है, लेता नहीं।

11. हिन्दुओं में अज्ञानता और अन्धविश्वास – अज्ञानता और अन्धविश्वास के कारण हिन्दू झूठे कर्मकाण्डों में फंसे हुए हैं। जो मर चुके हैं उनके लिए वे श्राद्ध करते हैं, ईश्वर–भक्ति के नाम पर जगराता करते हैं। ईश्वर को खुश करने के लिए वे पेड़–पौधों और नदी–तालाबों को पूजते हैं , ईश्वर का मनुष्य रूप में आना–जाना मानते हैं। तथाकथित ज्योतिषियों से वे अपना भूत और भविष्य पूछते फिरते हैं, दुख तकलीफ को टालने के लिए तागे–तावीज, जन्त्र–तन्त्र करवाते फिरते हैं।

12. भौंडे गीत – हिन्दू औरतें कीर्तनों में बड़े घटिया किस्म के, बे तुके, बे सिर–पैर के गीत गाती हैं। उन्हें वीरता के, सदुपदेश देने वाले, सत्य इतिहास बताने वाले सार्थक गीत गाने चाहिएं।

13. जगराते –पाप कर्म – हिन्दुओं में जगरातों की कुप्रथा पिछले 40 या 50 वर्षों से आरम्भ हुई है। ईश्वर भक्ति के नाम पर लाउडस्पीकर की ऊँची आवाज में रात भर घटिया किस्म के गीत गाते हैं, फिर घटिया, असम्भव, विनाशकारी कहानी कहते हैं। साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी इन जगरातों की निस्सारता को समझ सकता है, तो फिर हिन्दू क्यों नहीं समझते?

14. जातपात– जन्म की जातपात ने हिन्दू समाज को बांट दिया है, बेहद खोखला और कमजोर किया है। जातपात की बात पूरी तरह समाप्त होनी चाहिए। सभी की एक जाति–मनुष्य जाति–समझी जाए।

15. इतिहास को भुला दिया– इतिहास से सीख लेकर किसी भी समाज को आगे की रणनीति बनानी चाहिए। अगर आप इतिहास से सबक नहीं सीखते तो आपके साथ फिर वही कुछ होगा जो पहले हो चुका है। मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आठवीं सदी से लेकर आठारहवीं सदी तक अथाह अत्याचार किए हैं। उन्होंन हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा। वहां से सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात के रूप में बेहद धन लूटा। उन्होंने मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदें बना दीं, पुजारियों को गाजर–मूली की तरह काटा, करोड़ों की संख्या में हिन्दुओं का कत्लेआम किया, करोड़ों हिन्दुओं को तलवार के जोर से मुसलमान बनाया, लाखों हिन्दू महिलाओं से बलात्कार किया। अब भी पाकिस्तान, बांग्लादेश, कश्मीर आदि स्थानों पर जहां मौका लगता है वे वही कुछ कर रहे हैं। 1947 में जब पाकिस्तान बना था

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 4 का शेष

स्वस्थ कैसे रहें?...

हम भोजन कब करें इस विषय में अगली ऋचा का कहना है–

इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः।

सोम राजन्प्रा आयूंषि तारीरहानीव सुर्यो वासराणि। ऋ. 8.48.7

भावार्थ– इसका आशय स्पष्ट है। जब तक भूख न लगे, अन्न के लिए आकुलता न हो तब तक भोजन न करो। असी अवस्था में अन्न सुखदायी होता है और आयु बढ़ती है। अन्न को सोम राजा इसलिए कहा गया है कि शरीर में प्रवेश कर यही चमकता है और इन्द्रियों पर अधिकार रखता है। यदि अन्न न खाया जाय तो सब इन्द्रियां शिथिल हो जायं और शरीर भी न रहे। अतः शरीर का शासक होने से अन्न राजा है।

अगली ऋचा में इसी विषय को आगे बढ़ाते हुये कहा गया है कि हम ऐसा अन्न खाएं जिससे शरीर को सुख मिले तथा उसका कल्याण हो। हम सदा संयमी रहें, हमारे मन में सदैव सात्विक भाव बने रहें। हम श्रेष्ठ अन्न खाकर सात्विक बल धारण करें और काम, क्रोध आदि दोषों के वश में न होवें।

ऋ. 8.48.9 में बताया गया है कि अन्न से ही हमारे शरीर का पोषण होता है। वह शरीर के प्रत्येक अंग में जाकर उसका पोषण करता है। हम लोग अन्न के नियमों को भंग करते रहते हैं।

कभी कभी व्यक्ति अतिशय भोजन करके मृत्यु का ग्रास भी बन जाता है। अतिशय भोजन से शरीर में कई रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए हमें ऋतु के अनुसार, भूख के अनुसार तथा शरीर पोषण को दृष्टि में रखकर ही भोजन करना चाहिए।

हमने भोजन के विषय में पर्याप्त चिन्तन कर लिया है। अब हम जल विषय में ऋग्वेद के आधार पर विचार कर रहे हैं। जल भोजन से भी अधिक महत्व रखता है। भोजन के अभाव में तो लोग एक–एक माह तक भी जीवित रह सकते हैं परन्तु जल के अभाव में तो एक सप्ताह भी जीवित नहीं रह सकते। हमारे शरीर का ही दो तिहाई भाग जल युक्त है। ऋ. 10.9. सूक्त में जल पर ही विचार किया गया है वैसे दूसरे स्थानों पर भी जल को जीवन का मुख्य हेतु बताया गया है।

आपो हिष्टा मयो भुवस्ता न ऊर्जेदधातन।

महे रणाय चक्षसे। ऋ. 10.9.1.

जल सुखदाता है, वे हमें अन्न प्रदान करें तथा ज्ञान का साधन बनें।

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतह नः।

उशतीरिक मातरः। ऋ. 10.9.2.

इन जलों का कल्याणकारी रस हमें प्राप्त हो और वे माता के समान हमारे कल्याण करने वाले हों।

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शं योरभि स्रवन्तुन। ऋ 10.9.3

उत्तम जल हमारे अभीष्ट और रक्षा के लिए कल्याणकारी साधन बनें तथा हम पर सदा सुख की दृष्टि करें।

आपः पृणीत भेषजं बरूथं तन्वे मम।

ज्योश्च सूर्य दृशे। ऋ. 10.9.7.

जलीय प्राण हमें लम्बे समय तक सूर्य को देखने के लिए अर्थात् लम्बी आयु के लिए और शरीर की समस्त शक्तियों के लिए श्रेष्ठ ओषध देते रहते हैं। जल का शुद्ध होना अत्यन्त आवश्यक है।

स्वस्थ रहने के लिए हमें सदैव शुद्ध वायु का सेवन करना चाहिए। चाहिए। शुद्ध वायु के सेवन से हृदय को भी शक्ति मिलती है। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 186 वायु सूक्त है। इसमें वायु सम्बन्धी ज्ञान दिया है।

वात आ वातु भेषजं मयोभुनो हृदे प्रण आयूँषितारिषत्। ऋ. 10.186.1

वायु हमारे हृदय के लिए कल्याणकारक, आरोग्यकर ओषधियों को प्राप्त करता है और हमारी आयु को बढ़ाता है।

उत वात पितासि न उत भ्रातोत न सखाः।

स नो जीवातवे कृधि। ऋ. 10.186.2.

यह वायु हमारा पितृवत् पालक, बन्धुवत् धारण पोषक और मित्र वत् सुखकर्ता है और हमें जीवन वाला करता है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए रात्रि को गहरी नींद आना भी आवश्यक है। इसी समय हमारे शरीर की टूट–फूट कर मरम्मत होती है तथा नई कोशिकाओं का निर्माण भी होता है। वैदिक वाङ्मय में गहरी नींद का सुषुप्ति के नाम से वर्णन हुआ है। हल्की नींद में स्वप्नों का बाहुल्य होता है। गहरी नींद तभी आती है जब व्यक्ति ने दिनभर परिश्रम किया हो तथा तनाव से मुक्त रहा हो। अब विषय को आगे न बढ़ाकर यही विराम देते हैं। इति

73, शास्त्री नगर,
दादाबाड़ी
कोटा (राज.) – 324 009

☞ पृष्ठ 7 का शेष

हिन्दुओं की कमज़ोरियां

तब पाकिस्तान में हिन्दुओं की आबादी 20% के लगभग थी और अब 1% रह गई है। बंगलादेश में तब 30% हिन्दू थे अब 7% रह गए हैं। कश्मीर में हिन्दुओं पर अत्याचार किए और लगीाग सवा तीन लाख हिन्दुओं को कश्मीर छोड़ने पर मज़बूर कर दिया। पर हिन्दुओं ने इन सब घटनाओं से कोई सबक नहीं सीखा। हिन्दू अपने मित्र और शत्रु में अन्तर नहीं कर पाते। जो उन्हें समझाता है उसे वे अपना शत्रु मानते हैं और जो उन्हें बहकाता है उसे वे अपना मित्र मानते हैं। यह बहुत ही दुख का विषय है।

16.हिन्दुओं में नेतृत्व और संगठन का अभाव – हिन्दुओं का कोई तगड़ा नेता नहीं है जो सारी हिन्दू जाति को संगठित और सशक्त बना सके।

17. हिन्दू मुसलमानों की कब्रों से खैर मांगते फिरते हैं, वे कब्रें जिनमें हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले मुसलमानों को कभी दबाया गया था। यह मूर्खता की पराकाष्ठा है, हिन्दू वीरों का अपमान है और अपनी जाति से गद्दारी है। यहां कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं।

अजमेर की दरगाह शरीफ में सूफी सन्त मुइनुद्दीन चिश्ती की कब्र है। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (गरीब नवाज) का जन्म 1141 में अफगानिस्तान में हुआ था। वह मुहमद गौरी के साथ भारत आया था। उसने भारत में आकर 700 हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था। अजमेर में जिस स्थान पर दरगाह है वहां पर पृथ्वीराज चौहान का राज्य था। मुहम्मद गौरी पृथ्वीराज चौहान को पकड़कर उसकी आँखें निकालकर उसे बन्दी बनाकर अपने साथ अफगानिस्तान ले गया था।

बहराइच (उत्तर प्रदेश) के पास मसूद गजनी की मजार है। मसूद गजनी, सोमनाथ मन्दिर पर हमला करने वाले महमूद गजनवी का बेटा था। उसने 1033 में बड़ी सेना के साथ भारत पर आक्रमण किया था जून 1033 मे बहराईच के मैदान में मसूद गजनी की और भारत के हिन्दू राजाओं की सेनाओं के बीच जबरदस्त लड़ाई हुई। लड़ाई में मसूद मियां की सेना की हार हुई तथा वह स्वयं भी मारा गया। मुसलमानों ने उसे वहीं दबा दिया तथा उसे गाज़ी की पदवी दे दी। मुसलमानों में गाज़ी की पदवी सबसे बड़ी पदवी मानी जाती है। यह पदवी उसे दी जाती है जिसने गैर–मुसलमानों का कत्लेआम किया हो। वहां पर मुसलमान हर वर्ष इकट्ठे होते हैं और त्योहार मनाते हैं। दुख और आश्चर्य की बात है कि हिन्दू उन हिन्दू वीरों को तो भूल गए जिन्होंने अपनी जानें देकर मसूद मियां को मारा तथा उसकी सेना को हराया था। उलटा इस मसूद मियां की कबर पर मन्नतें मांगने जाते हैं और टी.वी. चैनल इसे धार्मिक सद्भावना एवं धर्मनिर्पेक्षता का जीता जागता प्रमाण बताते हैं।

महाराष्ट्र के एक गांव में अलीशाह की मजार है। बृहस्पतिवार के दिन हिन्दू औरतें उसे पूजती हैं। अलीशाह कौन था? औरंगजेब के समय में अलीशाह नाम का एक मुसलमान था। वह बहुत अत्याचारी था। इलाके में उसका बहुत आतंक था। वह गांव गांव में घूमता रहता था, जो सुन्दर हिन्दू लड़की देखती उसे अपनी वासना का शिकार बनाता था, जिस हिन्दू सेठ साहुकार से जो धन मांगता वह उसे देना पड़ता था। जब किसी हिन्दू युवक का विवाह होता था तब नई दुलहन को पहली रात अलीशाह के साथ बितानी पड़ती थी। जो कोई इस बात को न मानता उसके परिवार को वह समाप्त कर देता था। लगभग बीस गांवों के क्षेत्र में उसका प्रभाव था। हिन्दू उसके सामने मजबूर थे। कई वर्ष तक ऐसा चलता रहा। फिर एक गांव में धनी परिवार के युवक जोरावर सिंह का विवाह हुआ। अलीशाह का सन्देश आ गया कि अपनी पत्नी को उसके पास भेज दो। जोरावर सिंह ने उत्तर भेज दिया कि उसकी पत्नी अपनी एक दासी के साथ उस रात उसके पास पहुँच जाएगी। जोरावर सिंह ने अपने एक मित्र उदय सिंह को साथ लिया। दोनों ने स्त्री का वेश धारण किया, हथियार साथ लिए और गाड़ी में बैठकर अलीशाह के यहां पहुँच गए। नशे में धुत अलीशाह तथा और बहुत से मुसलमान गाड़ी के पास आ गए। जोरावर सिंह और उदय सिंह ने अलीशाह तथा उसके परिवार के सभी सदस्यों को मार गिराया। मुसलमानों ने अलीशाह को शहीद की उपाधि दी और उसकी मजार बना दी। हिन्दू जोरावर सिंह और उदय सिंह को तो भूल गए, अलीशाह की कब्र को पूजने लगे। (स्वामी शिवानन्द–हिन्दुओं की लूट)

831 सैक्टर 10
पंचकूला, हरियाणा
0172–4010679

ओ३म्–स्वस्ति पन्था मनुचरेम

हम कल्याण मार्ग के पथिक बनें-वेद।।

● आचार्य आर्य नरेश

सम्पूर्ण इस्लामिक मजहब में धर्म का शब्द ही नहीं है अतः सरकार द्वारा मुसलमानों को दी जाने वाली सहायता धर्म की नहीं मुस्लिम जिहाद की है। जिहाद का अर्थ "गैर मुसलमानों का वध" प्रमाण (देखें मुहम्मद उथेमिन द मुस्लिम बिलीफ पृ–22) आरक्षण विशुद्ध संस्कृत का शब्द है। आ = समन्तात् अर्थात् सब ओर से सबका रक्षण, अर्थात् रक्षा करना। इस प्रकार आरक्षण शब्द का पूर्ण अर्थ हुआ सब ओर से बिन किसी को छोड़े सबकी की रक्षा करना। आरक्षण का अर्थ रिजर्वेशन नहीं हो सकता क्योंकि इस का अर्थ सबके लिए नहीं अपितु सीमित व्यक्तियों हेतु है। 'आल' न जुड़ा होने से केवल कुछ लोगों हेतु और वह भी किसी विशेष मजहब व जाति हेतु, न कि सब गरीबों हेतु। क्योंकि कोई भी जाति व मजहब पूर्ण गरीब नहीं इसका लाभ उसकी दमदार क्रीमी लेयर ही उठाती है, एवं गरीब–गरीब ही रहते हैं। इसी राष्ट्रविभाजक आरक्षण के कारण 64 वर्षों से गरीब और अधिक गरीब हो गए हैं एवं उनका रोष नक्सलवादी प्रयोग कर रहे हैं। जो कि विदेशी हाथों में खेल रहे हैं। पदलोलुप वर्तमान नेताओं का उद्देश्य वस्तुतः राष्ट्र के कमजोर व गरीब वर्ग को धन–धान्य सम्पन्न करना नहीं अपितु उनकी जाति या सम्प्रदाय को मात्र प्रलोभन देकर उनकी वोट प्राप्त करना है। आरक्षण रूपी राजकीय राक्षस का राष्ट्र की सम्पूर्ण जनता को प्रधानमंत्री व उच्चतम न्यायालय के जज के नाम पत्र डालकर विरोध करना चाहिए। जहाँ भी कांग्रेस आदि सरकार के मंत्री आयें वहाँ आरक्षण विरोधी बैनर जैसे कि "आरक्षण है राष्ट्र का आभक्षण" बनाकर व बाजू पर काली पट्टी तथा हाथों में काले झण्डे लेकर विरोध करना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती अमरग्रन्थ *सत्यार्थ प्रकाश* में लिखते हैं कि यदि किसी पाप को देखकर हम उसका विरोध नहीं करते तो हम भी पापी कहलाते हैं। ठीक इससे विपरीत भारतीय आरक्षण बिना वोट के प्रलोभन नागरिकों की आवश्यकता पर आधारित है। इसने राष्ट्र को विश्वगुरु सोने की चिड़िया व बिना चोर तथा बिना मजहबी आतंक व भिखारी बिना जाति–पाँति, बिना प्रान्तवाद, बिना मज़हबवाद के रहित बनाया है। मानव धर्म वेद सर्वजन हेतु आरक्षण अर्थात् भौतिक, बौद्धिक, आत्मिक तथा सामाजिक सुरक्षा का उपदेश करता है। ईश्वर एक है। वह सर्वव्यापक, निराकार सबका उत्पादक, पालक व वेदज्ञान द्वारा सबका सद्मार्ग प्रेरक है। उसके लिए सर्वजन बिना भेदभाव के एक समान हैं अतः वेद के अनेक मन्त्र **वयं स्याम पतयो रयीणाम शंयोरभि स्रवन्तुनः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु** से पक्षपात रहित धनवान, अन्नवान, ज्ञानवान, आनन्दवान् व परस्पर सहयोगी एवं मित्र होने का उपदेश करते हैं। इसी वैदिक न्याय व्यवस्था से ब्रह्मा से लेकर लगभग युधिष्ठिर पर्यन्त करोड़ों वर्षों तक आर्यावर्त (भारत) के चक्रवर्ती सम्राटों ने सम्पूर्ण विश्व पर राज्य किया। विशाल भूमण्डलीय प्रजा को बिना ऊँचनीच, बिना वर्ग–संघर्ष व बिना परस्पर झगड़ों के एक परिवार के तुल्य वसुधैव कुटुंब कम् बनाये रखा। सारे संसार के लोग एक सच्चे शक्तिरूप भगवान ओम का ध्यान, मानव धर्म वेद का (संशय–भाग्यवाद–पापक्षमारहित) ज्ञान, यज्ञ के समान प्रकाश व सुगन्ध देने का अनुष्ठान करते दृढ़ संस्कारी गो रक्षक थे। गो दुग्ध से युक्त हो कर स्वप्न में भी किसी की हानि न करने वाले भूमि माता के सन्तान और सब सुखों एवं मोक्ष के आधार राष्ट्रहित बलिदान की सामूहिक भावना से युक्त थे। मानव मात्र का संविधान (वेद) राजलाभ हेतु जातिगत तुष्टी–करण से कोसों दूर था। ब्रह्मा, शिव, राम एवं कृष्ण आदि वैदिक महापुरुषों के राज्य में पूर्ण–धरा का समाज श्रेष्ठ आर्यसमाज था न कि केवल समाज का एक–आध भाग। वैदिक आरक्षण की नीति लुप्त होने से जो अव्यवस्था भारत में फैली उसे पुनः सुधारने हेतु देव दयानन्द वेदों की ओर लौटने का उद्घोष लगाकर सम्पूर्ण जन को पुनः कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम् के नाम से आर्य सम्पन्न बनाने हेतु आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने भारत व भारत से बाहर सभी मानवों को एक समान आरक्षण करने हेतु शंखनाद किया। सच्चे आरक्षण के स्थान पर व्यक्तिगत मजहबी, आर्थिक व जातीय रिजर्वेशन से समाज में मुस्लिम, (विज्ञान विरुद्ध, मानवता विरुद्ध देने वाले अंग्रेजी राज का डटकर खण्डन किया। उन्होंने राष्ट्र–गो हत्यारे, नारी स्वतन्त्रता हत्यारे, बाल चरित्र हत्यारे, समलैंगिक, काले गोरे के नाम पर मानवता के हत्यारे एवं मुस्लिम अथवा ईसाई मजहब का स्वरचित अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के 12,13,14 समु. (अध्याय) में पुरजोर खण्डन किया। मानवमात्र को बिना भेद–भाव के आरक्षण प्रदान कराने के प्रयास हेतु शास्त्रार्थ किए। एवं उनके शिष्यों स्वामी श्रद्धानन्द व पं. लेखराम ने हजारों विधर्मी हुए जनों को पुनः आर्य धर्म में रंग–जाति बिना भेद–भाव के आरक्षण दिया। मानवता की सुरक्षा व संवृद्धि उन मजहबी मुस्लिम–गोरों को पसंद न आने से एवं भारत को मुगलिस्तान व इंग्लिशस्तान बनाने में बाधक समझने से ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पण्डित लेखराम जैसे अनेक आर्यों की हत्या करवा दी गई। यह कार्य पद व राज्य के लोभ में दुष्ट–नादान नेताओं की प्रेरणा से हुआ और देश बँट गया। महजबी व जातीय आरक्षण सदा वर्ग संघर्ष, भेद–भाव व फूट ही पैदा करता है। कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया में वाल्यूम 6 पृ. 872 पर लिखा है कि कांग्रेस द्वारा मुसलमानों की अधिक इच्छापूर्ति से देश का विभाजन हुआ।

वैदिक गवेषक
उद्‌गीथ (हि.प्र.)

नोटिस–मकान खाली करो

● देवराज आर्यमित्र

एक व्यक्ति को किसी शहर में अच्छी नौकरी मिल गई। उसे वहाँ रहने के लिए मकान की आवश्यकता हुई। कहीं कोई अपना मकान किराये पर देने के लिये तैयार नहीं था। वैसे भी छड़े (अविवाहित) को रहने के लिये जगह मुश्किल से मिलती है। बहुत तलाश करने पर एक मकान मालिक कुछ शर्तों पर एग्रीमेंट लिखने पर तैयार हो गया। युवक ने अपने पहचान–पत्र के साथ मालिक की सब बातों को मानकर मकान में रहना शुरू कर दिया।

एक–दो महीने में जब उसे अच्छा वेतन मिलने लगा तब वह हर सप्ताह नई–नई फिल्में देखने जाने लगा। खाना तो पहले से ही होटल में खाता था। यार–दोस्तों का सर्कल (दायरा) भी बढ़ता गया। दोस्तों के साथ मिलकर धूम्रपान मद्यपान करना सीख लिया। जब पीने पिलाने की आदत पक गई तब अपने मकान में भी मित्रों के साथ शराब पीने लगा। होटल से मंगाकर मांस–मछली अण्डे खाने लगा। मित्रमण्डली की युवतियाँ भी आने जाने लगीं।

मकान मालिक किरायेदार की यह सब हरकतें देखकर बड़ा दुःखी हुआ। उसने एक दिन किरायेदार को कहा, तुम एग्रीमेंट में लिखी सब बातों को भुलाकर उनका उल्लंघन कर रहे हो। कृपया शीघ्र ही मकान खाली कर दो। उस युवक ने मकान मालिक के कहने पर कुछ ध्यान नहीं दिया और वैसे ही मौज–मस्ती से रहता रहा। मालिक ने एक वकील के द्वारा नोटिस भेजा फिर भी कुछ प्रभाव नहीं हुआ। अन्त में कोर्ट में दावा कर दिया। कोर्ट से सम्मन आने लगे लेकिन वह किसी भी तिथि–तारीख पर हाजिर नहीं हुआ। कोर्ट निर्णय के अनुसार पुलिस के द्वारा जबरन मकान खाली कराया गया।

प्रिय सज्जनो! यह मानव शरीर भी आलीशान मकान है। जिसे मालिक (ईश्वर) ने रहने के लिए दिया है। इसमें रहने के लिए एग्रीमेंट भी बनाया गया है। नियमों एवं सिद्धान्तों का पालन करते हुये एक सौ वर्ष तक इसमें रह सकते हो। यदि यम–नियमों का पालन करते रहे तो सौ वर्ष से अधिक भी रह सकते हो। यदि मालिक की शर्तों का उल्लंघन किया गया, उस युवक किरायेदार की तरह दुर्व्यसनों में फँसकर मकान को गन्दा करोगे तब मकान खाली करने के नोटिस आने लगेंगे। जैसे पहला नोटिस सिर के बाल सफेद हो गये। दूसरा आँखों की दृष्टि क्षीण हो गई। तीसरा कानों से कम सुनने लगा। चौथा मुंह में दांत नहीं रहे। पाँचवाँ घुटनों से चला नहीं जाता। इतने नोटिस आने पर भी मूर्ख मानव कुछ ध्यान नहीं देता है। मनमानी करता ही रहता है। आँखों पर चश्मा लगा लेता है। मुंह में बनावटी दांत लगा लेता है। कान में हीयरिंग मशीन लगा लेता है। परन्तु मकान मालिक के नियमों के विरुद्ध चलता रहता है। मन और इन्द्रियों के वशीभूत होकर कुपथ्य करता रहता है।

अन्त में परिणाम क्या होता है वह? अनेक रोगों में ग्रस्त हो जाता है और सौ वर्ष से पहले ही मकान खाली करके चला जाता है अर्थात् शरीर को छोड़ देता है।

सज्जनो! ईश्वर के दिये हुये शानदार बंगले में दीर्घायु तक रहना चाहते हो तो कुकर्मों, दुर्व्यसनों को त्यागकर श्रेष्ठ कर्मों की पूंजी संग्रह करना शुरू कर दो। मकान को शुद्ध पवित्र बनाकर रखो। विषय वासनाओं में फँसकर क्षीण–हीन मत बनाओ। जब अवधि पूरी हो जाये तो हँसते बोलते हुये खुशी से मकान छोड़ दो।

डब्ल्यू ज़ेड़–428, हरीनगर,
नई दिल्ली–64

www.thearyasamaj.org

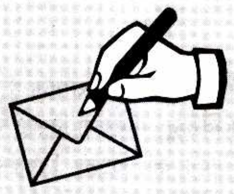

पत्र/कविता

मणि मुक्तामाला

तं धाता प्रत्यमुञ्चत। स भूतं व्यकल्पयत्।
तेन त्वं द्विषतो जहि।। अथर्व 10.6.21 ।।

प्रभु दत्त वेद की जय माला।
श्रुति मणियों की मुक्तामाला।।

ईश्वर से शब्द विमुक्त हुए, श्रुति में आकर संयुक्त हुए।
ऋषि बने इन्हीं के संदृष्टा, श्रुति सृष्टि नियम उपयुक्त दिए।
आनन्द प्रदाता श्रुतिशाला। श्रुति मणियोंकी मुक्तामाला।।

वेदों की कला कल्पना जो, मानव की यही अल्पना हो।
जो जा मिलते श्रुति संगति से, फिर उनमें नहीं जल्पना हो।
अन्तरमन करती उजियाला। श्रुति मणियों की मुक्तामाला।।

कर्त्तव्य निभाते चलते हैं, उपकार उगाते चलते हैं।
ज्योतिर्मय जीवन दर्शन के, आदर्श सजाते चलते हैं।
यह तन को करती तपवाला। श्रुति मणियों की मुक्तामाला।।

तुम भू सत्ता के शासक हो, क्या अपने भी अनुशासक हो।
भीतर बाहर के विद्रोह, क्या उनके बने विनाशक हो।
दुर्व्यसनों का तोड़े ताला। श्रुति मणियों की मुक्तामाला।।

आलस्य ईर्ष्या असन्तोष, क्रोध अधीरज भय घृणा दोष।
अवगुण ढल जाते सद्गुण में, तब मिलते प्रिय परितोष कोष।
कर देती ज्योतित जय ज्वाला। श्रुति मणियों की मुक्तामाला।।

डा. सारस्वत मोहन
मनीषी
ए–13–14, सैक्टर–11 रोहिणी, दिल्ली

जीवन यात्रा में चेतावनी

सज्जनों! यह दुनिया मुसाफिरखाना है। हम सब यात्री हैं। एक दिन यहां (जहां) से जाना है। ध्यान रखो! यात्रा में आवश्यक सामान रखना ही उचित है जिसे आराम से उठा सको। जितना सामान ज्यादा होगा उतनी यात्रा में कठिनाई होगी।

एक बात और याद रखो! सोने–चांदी के आभूषण यात्रा में खतरनाक हैं। सदाचार के श्रेष्ठ गुण ही मानव जीवन के सच्चे अलंकार हैं। ये ऐसे अलंकार हैं जो सदैव आपके पास रहेंगे। न कोई छीन सकता है, न चोरी कर सकता है। ये अलंकार कहां से प्राप्त होंगे। इनको वैदिक सत्संग में जाकर और स्वाध्याय करके मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं।

प्रिय सज्जनों! यह मानव जीवन हमें पिछले जन्मों के शुभ कर्मों के परिणामस्वरूप मिला है। यह एक सुनहरी अवसर है, आप चाहो तो यम नियमों का पालन करके मोक्ष प्राप्त कर सकते हो। यदि मुक्ति का मार्ग कठिन लगता है तो दुष्कर्मों में इस जीवन को नष्ट तो मत करो।

हम देख रहे हैं कि लोग सारे दिन झूठ–सच बोलकर हेराफेरी से भौतिक सम्पत्ति संग्रह करने में लगे हुए हैं, बताओ यह सम्पत्ति किसके लिए जमा कर रहे हो? आप कहोगे हमारे बाद बेटे–पोतों के काम आएगी। लेकिन आपने पुत्रों को योग्य बनाया नहीं, वे तो इसे नष्ट कर देंगे और अन्त में तुम्हारे साथ जाएगी नहीं। फिर क्यों पाप की गठरी ढो रहे हो?

मेरे भोले भाई! ऐसा धन जमा कर जो तेरे साथ जाएगा। मरने के बाद भी काम आएगा। शुभ श्रेष्ठ कर्मों की दौलत आज से जमा करना शुरू कर दो। अन्त में कवि की पंक्तियां लिखता हूं–

वह चाल चल कि उम्र खुशी से कटे तेरी।

वह काम कर कि तुझे सब याद किया करें।।

देवराज आर्यमित्र,
डब्ल्यू जेड–428, हरिनगर,
नई दिल्ली–64

****

विश्व भर के आर्यों को प्रसन्नता होगी

नई दिल्ली से प्रकाशित (5 मई से 11 मई) साप्ताहिक आर्य जगत् पत्रिका में प्रथम पृष्ठ पर ओडिशा के गुलई बहाल ग्राम में वैदिक धर्म दीक्षा का विशाल कार्यक्रम शीर्षक से फोटो तथा समाचार प्रकाशित हुआ था, जिसमें होली महोत्सव के शुभ अवसर पर उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा विभिन्न मतावलंबी 200 से अधिक परिवारों को वैदिक धर्म में दीक्षित करने का वर्णन किया गया था। इस समाचार से विश्व भर के आर्यों को प्रसन्नता होगी।

महर्षि दयानंद ने आर्य समाज की स्थापन के पश्चात् यह कहा था कि मैंने आर्य समाज की स्थापना किसी नए मत अथवा पंथ के रूप में नहीं की। मेरा धर्म तो सत्य सनातन वैदिक धर्म है जो ब्रह्मा जी से जैमिनी मुनि तक चलता आया है। इसी वैदिक धर्म के प्रचार के लिए मैंने आर्य समाज बनाया है। उन्होंने 31 दिसंबर 1880 को आर्य समाज, मुलतान (अब पाकिस्तान) के मंत्री मा. दयाराम वर्मा को यह पत्र लिखा था कि आने वाली जनगणना में (जो 1881को होनी थी,) सब लोग धर्म के खाने में वैदिक धर्म तथा जाति खाने में आर्य लिखाएं और पंजाब में सब लोगों का यह बता दिया जाए क्योंकि उस समय पंजाब में ही कुछ आर्य समाजें स्थापित हुई थीं। परंतु दुर्भाग्य से महर्षि दयानंद के इस आदेश का पूरी तरह से पालन नहीं हुआ, क्योंकि आर्य नेताओं ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। जबकि कुछ लोगों द्वारा यह शिकायत की गई कि जनगणना के स्टाफ ने यह कह कर टाल दिया कि उनके पास जो धर्मों की सूची है, उसमें वैदिक धर्म का तो कहीं नाम ही नहीं है। इसलिए आर्य समाज के नेताओं को जनगणना के अधिकारीयों से यह अनुरोध करना चाहिए था कि वे धर्म के खाने में वैदिक धर्म लिखाने से मना न करें। इस बारे में आर्य नेताओं का सरकार के बड़े अधिकारियों से बात करनी चाहिए।

वास्तव में, हिंदू कोई धर्म कोई धर्म नहीं है, यह तो एक जीवन पद्धति है (it is a way of life) और इसमें कई विचारों के लोग हैं। हिंदू नाम तो हमारे किसी भी धर्म ग्रंथ में नहीं लिखा है। हमारा प्राचीन नाम तो आर्य था और देश का नाम आर्यावर्त था, जो बाद में बदल कर आर्यावर्त के स्थान पर भारत, हिंदुस्तान, इंडिया आदि नामों वाला हो गया। इसलिए हमारा धर्म हिंदू नहीं है। पुराना होने से हमारे धर्म को सनातन धर्म भी कहते हैं, जो वैदिक धर्म ही है। इसलिए आर्यसमाज के लोग सब सरकारी तथा गैर सरकारी कागजपत्रों में अपना धर्म वैदिक ही लिखें–लिखाएं फिर भी आर्य लोग हिंदुओं से अलग नहीं हैं, परन्तु हमारे धर्म का नाम तो वैदिक धर्म ही है। हिंदुओं में से ही अधिक लोग आर्य समाज में आते हैं।

यह अच्छा होगा, अगर देश–विदेश की सब आर्य समाजें लोगों को हवन यज्ञ में बिठा कर वैदिक धर्म की दीक्षा दें। आर्य समाज के संन्यासी महात्मा इस बारे में पहल करें– ऐसा मेरा निवेदन है, तभी वैदिक धर्म अस्तित्व में आएगा। इस तरह आर्यों के परिवार भी वैदिक धर्मी बनेंगे। इस समय बहुत कम परिवार ही आर्य समाजी हैं। ऐसा करने से ही आर्य समाज की उन्नति होगी की और वह जीवित रहेगा। यह सबको जान लेना चाहिए, क्योंकि किसी धर्म अथवा मत को मानने वाले अपने–अपने धर्म के पक्के होते हैं और उसी के अनुसार चालते हैं। सब आर्य लोग निम्न लाइनें हमेशा याद रखें–

आर्य हमारा नाम है, वैदिक हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा ईश है, यज्ञ–योग हमारा कर्म।।

सत्य हमारा लक्ष्य है, गायत्री महामंत्र।
भारत हमारा देश है, सदा रहे स्वतंत्र।।

ओडिसा में यह समारोह स्वामी धर्मानंद जी, प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानंद तथा वानप्रस्थी विश्किेशन शास्त्री के प्रयास से संपन्न हुआ है, उन्हें साधुवाद।

अश्वनी कुमार पाठक
बी–4/256–सी
केशवपुरम, दिल्ली– 110035

****

डी.ए.वी. कलानौर में यज्ञ और पर्यावरण पर चर्चा

डी.ए.वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल कलानौर के प्रांगण में उत्तराखण्ड त्रासदी में हताहत हुए जनमानस की आत्मिक शान्ति के लिए पावन यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्या बिमला जुनेजा, समस्त अध्यापक वर्ग एवम् विद्यार्थियों ने यज्ञ में आहुतियाँ समर्पित कर पवित्र आत्माओं की शान्ति के लिए प्रार्थना की। विद्यालय में प्रातः कालीन सभा के अन्तर्गत दो मिनट का मौन भी रखा गया। यज्ञ के अन्त में स्कूल की प्राचार्या बिमला जुनेजा एवम् अध्यापक राकेश कुमार ने 'पर्यावरण एवम् सन्तुलित विकास' विषय पर अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए बच्चों को यज्ञ का महत्व बताया तथा पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सर्वदा तत्पर रहने को कहा।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली

1.	रविदेव गुप्ता	प्रधान
2.	एस.के.शर्मा	मंत्री
3.	संजय खण्डेलवाल	कोषाध्यक्ष

आर्य महिला समाज

1.	श्रीमती सरोज कौड़ा	प्रधान
2.	श्रीमती सीता वर्मा	उप प्रधान
3.	श्रीमती नीलम गुप्ता	कोषाध्यक्ष

स्वामी दर्शनानन्द निर्वाण शताब्दी पर होंगे व्याख्यान

परोपकारिणी सभा, अजमेर, के एक निर्णयानुसार स्वामी दर्शनानन्द की निर्वाण शताब्दी पर वर्ष भर विभिनन आर्य समाजों में शताब्दी पर्व पर व्याख्यान आयोजित किये जायेंगे।

आर्य समाज, मयूर विहार– 1 में पहला व्याख्यान 11 अगस्त 2013 को 11 बजे से होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' अबोहर, का व्याख्यान होगा। श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य, मेरठ, विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित होंगे।

यह सूचना प्रधान आर्य समाज, मयूर विहार से प्राप्त हुई।

इन्द्रः सूर्यमरोचयत्

● कृपाल सिंह वर्मा

आधुनिक विज्ञान में हिलियम गैस के संलयन को सूर्य के प्रकाशित होने का कारण बताया है। ऋग्वेद की ऋचा 3/3/6 के अनुसार विद्युत् सूर्य को चमकाता है। महर्षि कणाद तथा महर्षि कपिल आदि आर्ष वैज्ञानिक अग्नि की उत्पत्ति वायु से मानते हैं। कहा है– **"वायोरग्नि"** अर्थात् अग्नि की उत्पत्ति वायु से होती है। सृष्टि उत्पत्ति क्रम में भी आकाश तत्व के पश्चात् सबसे पहले वायु तत्व बनता है। वायु से अग्नि की उत्पत्ति होती है। **"अग्नेरापः"** अर्थात् अग्नि से जल तत्व का निर्माण होता है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार गन्धहीन पदार्थों को जल तत्व कहा जाता है तथा गन्धयुक्त पदार्थों को पृथिवी तत्व के अन्तर्गत रखा गया है। इस प्रकार संसार में पाये जाने वाले समस्त पदार्थ Elements, compounds and mixtures सब जल तत्त्व अथवा पृथिवी तत्त्व के अन्तर्गत आ जाते हैं। Electricity तथा Heat वायु तत्व के अन्तर्गत आते हैं। प्रकाश अर्थात् तेज अग्नि तत्त्व के अन्तर्गत आता है। चन्द्रमा गर्म अदृश्य रश्मियों को सौख लेता है तथा प्रकाशयुक्त शीतल रश्मियों को पृथिवी पर भेजकर उपकार करता है।

हिलयम एक गन्धहीन गैस है जो वैदिक विज्ञान के जल तत्व के अन्तर्गत आती है। वैदिक विज्ञान के अनुसार ही अग्नि तत्व से जल तत्व की उत्पत्ति होती है तो स्वाभाविक रूप से जल तत्त्व को अग्नि तत्त्व में बदला जा सकता है लेकिन सूर्य का तापक्रम इतना अधिक है कि किसी भी प्रकार की गैस की उपस्थिति संभव नहीं है। फिर यह भी बात विचारणीय है कि वेद यह क्यों कहता है कि विद्युत् सूर्य को प्रकाशित करता है। "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।"

पृथ्वी एक बहुत विशाल चुम्बक है। स्वाभाविक रूप से इसकी चुम्बकीय तरंगें भी उतनी ही विशाल एवं शक्तिशाली होंगी। यह पृथ्वी रूपी चुम्बक 24 घंटे में अपनी कीली पर एक चक्कर लगा लेती है तथा 360 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा कर लेती है। इसलिए इसकी चुम्बकीय तरंगें भी अत्यन्त गतिशील होंगी। सूर्य रश्मियां एक तरफ सूर्य का स्पर्श करती हैं तो दूसरी ओर पृथ्वी आदि ग्रहों का स्पर्श करती हैं अर्थात् पृथ्वी रूपी चुम्बक की चुम्बकीय तरंगें अत्यन्त गति से सूर्य रश्मियों से टकराती है। सूर्य रश्मियाँ विद्युत् आवेश की वाहक होती हैं। इसका उदाहरण Solar Electricity है। जनरेटर चुम्बकीय क्षेत्र को विद्युत् धारा में बदल देता है। तो क्या ग्रहों के चारों ओर विद्यमान् चुम्बकीय क्षेत्र विद्युत् में न बदलता होगा?

सूर्य रश्मियां चमकते हुए वायुगत तार हैं जो ग्रहों के गतिशील चुम्बकीय क्षेत्र से होकर गुजरते हैं। क्या सम्पूर्ण सौर परिवार एक जनरेटर है जिसके असंख्य गतिशील Cathodes and Anodes केन्द्र सूर्य में स्थित हैं? क्या सूर्य तभी तक चमक रहा है जब तक इसकी चारों ओर से ग्रहपिण्ड गतिशील है? वैदिक विज्ञान में Magnetism को सोम कहते हैं। इस सम्बन्ध में महर्षि यास्क कहते हैं– **"सोमः जनिता सूर्यस्य"** अर्थात विद्युत् सूर्य का उत्पादक है।

यह पूर्ण ऋचा इस प्रकार है–

"इन्द्रो मन्दा रोदसी पपृथच्छव, इन्द्र सूर्यमरोचयत्।
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि चेमिरे, इन्द्रे स्वनास इदुवः।।"

(i) इन्द्रः मन्हा रोदसी पप्रथत् शवः

इन्द्र अर्थात् विद्युत् सूर्य तथा पृथ्वी के मध्य अपनी शक्ति में वर्तमान है।

(ii) इन्द्रः सूर्यम् अरोचयत्–

विद्युत् सूर्य को प्रकाशित करता है।

(iii) इन्द्रेह हं विश्वा भुवनानिन येमिरे–

विद्युत् शक्ति में निहित होकर सब ग्रह पिण्ड घूम रहे हैं।

(i) इन्द्रः स्वनासः इन्द्वः–

इन्द्र, आदित्य अर्थात् प्रकाशयुक्त भाग इन्द्र अर्थात विद्युत् में निहित होता है।

253 शिवलोक, कंकरखेडा, मेरठ
फोन– 9927887788

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 31/07/2013 To 1/08/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

डी.ए.वी. इंटरनैशनल अमृतसर राष्ट्रीय ग्रीन स्कूल अवॉर्ड से सम्मानित

डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल को विज्ञान एवं वातावरण केन्द्र (सी.एस.ई.) की ओर से राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार ग्रीन अवार्ड से सम्मानित किया गया।

दिल्ली में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में श्री रमाकांत गोस्वामी, मंत्री परिवहन, चुनाव, कानून एवं श्रम मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने प्रिंसीपल अंजना गुप्ता को यह पुरस्कार देकर सम्मानित किया। भारत रॉक बैंड एवं इंडियन ओशन के माननीय सदस्य राहुल राय एवं अमित कलीम भी इस समारोह में विशेष रूप से उपस्थित थे। विद्यालय को स्मृति चिह्न एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।

विद्यालय को यह पुरस्कार प्राकृति संसाधनों–वायु, जल भूमि एवं ऊर्जा के संरक्षण एवं सदुपयोग हेतु किए जा रहे प्रयासों के लिए दिया गया। विद्यालय के सफल प्रयासों से व्यर्थ एवं अनुपयोगी जल भंडार के 87% भाग को स्वच्छ करके पुनरुपयोग योग्य बनाया गया। विद्यालय में यह नियम है कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने जन्म दिन पर एक पौधा ला कर विद्यालय में रोपता है और स्वयं उसकी देखभाल भी करता है।

इस राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार हेतु देश भर के 20 विद्यालय चुने गए। डी.ए.वी. इंटरनैशनल का स्थान देश भर में सर्वोच्च रहा।

नवम्बर 2012 में विद्यालय को भारत सरकार, सी. बी. एस. ई. एवं आई. जैड की ओर से राष्ट्रीय स्वच्छता पुरस्कार के रूप में 60,000/–रूपए का चैक, स्मृति चिह्न एवं प्रमाण पत्र भी मिल चुका है।

डी.ए.वी. वसन्त कुंज में शांति-यज्ञ

पवित्र देवभूमि उत्तराखंड में आए राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा से प्रभावित श्रद्धालुओं एवं स्थानीय आवासियों के सुरक्षित जीवन हेतु डी.ए.वी. वसंत कुंज, परिसर में सभी विद्यार्थियों एवं सदस्यों के पूर्ण सहयोग से शांति–यज्ञ का आयोजन किया गया। सभी ने यज्ञ में आहुति देते हुए ईश्वर से यह प्रार्थना की कि वे सभी परिवार–जन इस दुखद बेला में अपना आत्म–संयम बनाए रखें तथा पुनः सामान्य जीवन यापन करने की शक्ति एकत्रित कर सकें। हवनोपरांत सभी विद्यार्थियों को इस आपदा के मुख्य कारणों से अवगत करवाते हुए यह समझाया गया कि पर्यावरण में यदि संतुलन बना रहे, तो इस प्रकार की आपदा से हम बच सकते हैं। उन्हें

पर्यावरण एवं उसका संतुलित विकास' की महत्ता को समझाया गया। साथ ही यह भी जानकारी दी गई कि पर्वतीय क्षेत्र में पनप रहे व्यावसायिकरण पर अंकुश लगाना अति आवश्यक है। विद्यालय की प्रधानाचार्या जी ने भी विद्यार्थियों को समझाया कि प्राकृतिक वैभव को बनाए रखने के लिए हमें जल–संरक्षण पर जोर देना चाहिए, विद्युत उपकरणों का दुरूपयोग नहीं करना चाहिए, पर्वतीय स्थलों की सुंदरता को बनाए रखना चाहिए। सभी विद्यार्थियों ने गंभीरता से भविष्य में पर्यावरण को हानि न पहुँचाने की प्रतिज्ञा ली।

डी.ए.वी. स्कूल टोहना द्वारा विशाल जनचेतना रैली का आयोजन

डी.ए.वी. स्कूल टोहना द्वारा लोगों को भू संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए विशाल जनचेतना रैली का आयोजन किया गया। श्री मनोज जी ने हरी झंडी दिखा कर रैली को विद्यालय परिसर से रवाना किया जो शहर के मुख्य मार्गों से होकर गुजरी। जनचेतना रैली को शहर के सामाजिक संगठनों द्वारा जोरदार समर्थन प्रदान किया गया। रैली में प्राचार्या डा. माला उपाध्याय के नेतृत्व में स्टॉफ सदस्यों के साथ ग्रीन टीम एवं कक्षा दसवीं तक के विद्यार्थियों ने पृथ्वी के बचाव के प्रति जनचेतना रैली में उत्साहपूर्वक भाग लिया व नारों के दवारा लोगों को जागरूक किया। इस अवसर पर प्रमुख समाज सेवी

डा. शिव सचदेवा जी, श्री मनोज जी श्री साहब सिंह, श्री सतीश सैनी, श्री गुरुदेव सिंह जी, राधे बिश्नोई जी, श्री रणधीर मलान जी के साथ अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्राचार्या जी ने बताया कि रैली आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य लोगो को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना है। उन्होंने आह्वान किया कि प्लास्टिक या पॉलीथिन को नकारें, बचे सामान या पराने सामान को पुनः उपयोग करने की कोशिश करें। पानी बचाने का उपाय करें।

मुद्रक व प्रकाशक – श्री प्रबोध महाजन, सभा मंत्री द्वारा मदन गोयल के प्रबंध में अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – श्री पूनम सूरी